RNI No. 7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 60 अंक : 11 प्रकाशन तिथि : 25 अक्टूबर कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 नवम्बर 2023
शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

दीपोत्सव पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

IAS / RAS

तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board

Springboard Academy,
Main Riddi Siddi Choraha,
Opposite Bank of Baroda,
Gopalpura, Bypass Jaipur

Website : www.springboardindia.org

संघशक्ति

4 नवम्बर, 2023

वर्ष : 60 अंक : 11

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय – सूची

समाचार संक्षेप	✍	04
चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	07
पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैन सिंह बैठवास	08
भक्त-चरित्र	✍ सुश्री रश्मि रामदेरिया	10
मौन की शक्ति	✍ आचार्य श्री महाप्रज्ञ	12
बांदनवाड़ा का अन्तिम मेवाड़-मुगल संघर्ष	✍ डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत	15
भारतीय संस्कृति में नारी	✍ डॉ. प्रभाकर सिंह	20
पाबू पैंतीसी	✍ श्री मदनसिंह सोलंकिया तला	23
महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍ श्री भँवर सिंह मांडासी	25
काठेवाड़ी-महाराष्ट्र आदर्श गाँव.......	✍ कर्नल हिम्मतसिंह	27
प्रणाम का महत्त्व	✍ श्री गोविन्द सिंह कसनाऊ	32
अपनी बात	✍	34

समाचार संक्षेप

वीर शिरोमणि दुर्गादास जयंती :

आंग्ल तिथि के अनुसार राष्ट्रनायक दुर्गादास जी की जयन्ती 13 अगस्त को अनेक स्थानों पर मनाई गई। भारतीय पंचांग अनुसार द्वितीय श्रावण शुक्ला चतुर्दशी को भी अनेक स्थानों पर दुर्गादास जी की जयन्ती पर समारोह आयोजित हुए। यह संयोग ही है कि दुर्गादास जी के जन्म के वर्ष में भी दो श्रावण मास थे और इस वर्ष भी श्रावण अधिक मास था।

माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मणसिंहजी के सान्निध्य में चावण्डिया कालोली में चल रहे शिविर के विदाई समारोह के साथ राष्ट्र नायक दुर्गादास जी की जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम में चावण्डिया, परेवड़ी, चितावा, दौलतपुरा, कोकपुरा, करकेड़ी, कुकनवाली, आसरवा, पलाड़ा आदि गाँव के समाजबन्धु उपस्थित रहे। गुजरात के गोहिलवाड़ सौराष्ट्र संभाग के अवाणिया गाँव में वीर शिरोमणि दुर्गादास जी की जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई। इस कार्यक्रम में वयोवृद्ध स्वयंसेवक श्री अजीतसिंहजी धोलेरा का सान्निध्य मिला।

बाली कस्बे में स्थित श्री उम्मेद राजपूत छात्रावास के प्रांगण में श्री क्षत्रिय सहयोग मंच बाली तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में दुर्गादास जी की जयन्ती का आयोजन हुआ। क्षेत्र के अनेक प्रमुख लोग इस जयन्ती समारोह में उपस्थित रहे तथा अपने विचार प्रकट किए। जालोर में धानसा गाँव स्थित जलन्धर नाथ महादेव मंदिर प्रांगण में जयन्ती मनाई गई। यहाँ भी क्षेत्र के अनेक प्रमुख सामाजिक महानुभाव जयन्ती कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

उदयपुर में अशोक नगर स्थित अलख नयन मंदिर में जयन्ती कार्यक्रम में सम्मिलित होने प्रमुख लोग पहुँचे। बाड़मेर में स्टेशन रोड़ पर स्थित मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास में मनाई गई। जयन्ती में अनेक स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। सूरत में सारोली स्थित अभिमन्यु उद्यान में राष्ट्रनायक दुर्गादास जी की जयन्ती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। वहीं पर रक्षाबन्धन कार्यक्रम भी मनाया गया। मध्य गुजरात संभाग में अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत में श्री क्षत्रिय युवक संघ तथा जय अम्बे स्वयंसेवक संघ काणेटी के संयुक्त तत्वावधान में काणेटी गाँव स्थित श्री मातरी माताजी के प्रांगण में जयन्ती मनाई, रक्षाबन्धन पर्व मनाया तथा यज्ञोपवीत धारण किया।

गोहिलवाड़ संभाग के मोरचन्द मण्डल में वीर शिरोमणि दुर्गादास जी की जयन्ती का आयोजन मोरचन्द की कन्या शाला के मैदान में हुआ। यज्ञोपवीत भी धारण की गई। मोरचन्द, खड़सलिया, थलसर व भक्तिनगर शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। मुंबई में मलाड़ पूर्व स्थित पारेख हॉल में 3 सितम्बर को ही जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न हो गया था। श्री क्षत्रिय संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी समय चल रहे थे, उनमें भी जयंती मनाई गई। सभी कार्यक्रमों में 28 जनवरी को दिल्ली में पूज्य तनसिंहजी के शताब्दी समारोह के आयोजन सम्बन्धी सूचना और निमंत्रण दिया गया।

संघप्रमुख श्री का प्रवास :

- ✦ 14 सितम्बर की रात को बीकानेर पहुँचकर 15 सितम्बर को लूणकरणसर क्षेत्र के सोढवाली गाँव में आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में पहुँचे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई, पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी दी गई तथा समारोह के लिए निमंत्रण दिया। सायंकाल बीकानेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों की बैठक, नारायण निकेतन कार्यालय में रखी गई। संभाग के कार्यों की समीक्षा की गई।

- 16 सितम्बर को कानासर गाँव में स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में मातृशक्ति भी उपस्थित रही। संघ का परिचय दिया गया। जन्म शताब्दी समारोह हेतु निमंत्रण दिया गया। वापस बीकानेर आकर पाली के लिए रेल मार्ग से रवाना हुए।
- 17 सितम्बर को जोजावर (पाली) में पाली प्रांत के सहयोगियों की बैठक में समिलित हुए। विभिन्न जिज्ञासाएँ और शंकाएँ जो प्रकट हुई उसका समाधान संघप्रमुखश्री ने किया।
- 17 सितम्बर को पाली में लोक देवता पाबूजी राठौड़ की जयन्ती संघप्रमुखश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम वंदेमातरम् एकेडमी में सम्पन्न हुआ।
- 18 सितम्बर को बगड़ीनगर (पाली) में राव जैता जी की जयन्ती समारोह में संघप्रमुखश्री पहुंचे। वीर शिरोमणि राव जैताजी के शौर्य का वर्णन हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में उसी तरह के शौर्य सम्पन्न युवाओं के निर्माण की ओर बढ़ रहा है। इसके लिए साधना से गुजरना पड़ता है। साधना कष्टपूर्ण होती है पर साधना आवश्यक है।
- 23 सितम्बर को संघप्रमुखश्री पूज्य तनसिंहजी की जन्म स्थली बेरसियाला (जैसलमेर) पहुँचे। पूज्य तनसिंहजी की प्रतिमा के चरणों में नमस्कार कर जन्म शताब्दी वर्ष के सफल आयोजन हेतु प्रार्थना की। उपस्थित सहयोगियों से संवाद किया।
- 24 सितम्बर को सोनू गाँव (जैसलमेर) में आयोजित जुझार बिंकासी शौर्य स्मृति दिवस
- कार्यक्रम संघप्रमुखश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। क्षेत्र के प्रमुख समाज बन्धु व मातृशक्ति की उपस्थिति रही।
- 24 सितम्बर को चांधन क्षेत्र के झाबरा गाँव में राव डेल्हाजी शौर्य स्मृति दिवस कार्यक्रम संघप्रमुखश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। समारोह में अनेक गाँवों से समाज बन्धु सम्मिलित हुए और मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही।

अन्य कार्यक्रम :

- श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के इकोनोमिक फोरम का गठन 9 सितम्बर को मोडर्न स्कूल जयपुर में सम्पन्न हुआ। पूर्व में जयपुर तथा दिल्ली में इकोनोमिक फोरम की कार्यशाला आयोजित हो चुकी थी।
- पूज्य तनासिंहजी के जन्म शताब्दी वर्ष के अर्न्तगत होने वाले अनेक कार्यक्रमों की श्रृंखला में 8 सितम्बर को जैसलमेर जिले के बडोड़ा गाँव के पास स्थित राजश्री दयालदास खेतसिंहोत की छतरी पर उनका शौर्य दिवस मनाया गया। समारोह में अनेक गाँवों के सामाजिक लोग उपस्थित रहे।
- श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के 52 सहयोगियों ने 2 व 3 सितम्बर के दो दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम में भाग लिया। परस्पर सहयोग व समन्वय बढ़ाने के लिए ऐसे कार्यक्रम फलदायी होते हैं। पाली के रणकपुर जैनमंदिर, हल्दीघाटी युद्धस्थली, कुंभलगढ़ दुर्ग, जवाई बांध आदि स्थलों का भ्रमण रहा। भ्रमण में आए सभी स्थलों का ऐतिहासिक महत्त्व उस जगह चर्चा में आ ही जाता है।
- धानेरा (पालनपुर) में 7 सिम्तबर, कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के तहत स्नेह मिलन कार्यक्रम जागीरदार दरबार हॉस्टल में आयोजित हुआ।
- शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के हेतु गुजरात में 'गाँव-गाँव, नगर-नगर शताब्दी संदेश यात्रा' का आयोजन प्रारम्भ हुआ है। 28 अगस्त को खदरपुर स्थित वीर मुखड़ोजी गोहिल आश्रम से यात्रा का शुभारम्भ किया गया। कर्मचारी नगर

(पुलसर) पहुँची जहाँ शाखा प्रारम्भ करने पर भी चर्चा हुई।

- झिनझिनयाली (जैसलमेर) में कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर प्रजापालक संत मूलचन्दजी की जयन्ती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। समाज के अनेक वरिष्ठ लोग तथा सहयोगी उपस्थित रहे।
- 9 से 10 सितम्बर तक तारानगर (चूरू) क्षेत्र में सम्पर्क किया गया जिसमें 22 से 25 सितम्बर तक तारानगर में होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की सूचना के साथ दिल्ली में होने वाले जन्म शताब्दी कार्यक्रम के लिए निमंत्रण भी दिया गया?
- पूणे की शाखाओं का सामूहिक भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम के साथ आगामी प्रशिक्षण शिविर से सम्बन्धित चर्चा की गई।
- मोरना (बिजनौर) में जन्मशताब्दी वर्ष के तहत स्नेह मिलन कार्यक्रम 27 अगस्त को मोरना के महाराजा मुकुटसिंह संस्थान में सम्पन्न हुआ।
- जैसलमेर जिले के झलोड़ा गाँव में भगवान श्रीकृष्ण के नवनिर्मित मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर जन्म शताब्दी कार्यक्रम का निमंत्रण दिया गया। समारोह 3 से 7 सितम्बर तक चला।
- अहमदाबाद जिले की 6 तहसीलों में सम्पर्क यात्रा का आयोजन कर पू. तनसिंहजी का जीवन परिचय बताया गया, संघ की जानकारी दी गई तथा शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया गया। सम्पर्क यात्रा के लिए सात दल सहयोगियों के बनाए गये। इन्होंने 6 तहसीलों के 12 गाँवों में सम्पर्क किया। बावला, धोलका, दसक्रोई, विरमगाम, देत्रोज तथा मांडल तहसीलों में सम्पर्क यात्रा सम्पन्न हुई। होने वाले बालिका शिविर के सम्बन्ध में तथा बालक शिविर के सम्बन्ध में भी चर्चा हुई।
- अजमेर, चित्तौड़गढ़ और केकड़ी जिलों में विशेष शाखाओं का आयोजन जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में सम्पन्न हुआ। सूपागढ़ में 27 अगस्त को, अजमेर जिले के सहयोगी वर्ग पहुँचे। इसी दिन चित्तौड़गढ़ स्थित जौहर भवन में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रान्त के ही बेगूं मंडल के हरपुरा गाँव में भी विशेष शाखा का आयोजन रहा। भदेसर तहसील के कांस्या कलां गाँव में कार्यक्रम आयोजित हुआ केकड़ी जिले में भिनाय के जेमती माता मंदिर रेण घाटी में भी विशेष शाखा आयोजित हुई।
- जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त गुजरात में संदेश यात्रा चल रही है। 93 वर्षीय वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवंतसिंहजी पांची के 93 गाँवों की यात्रा के संकल्प के अन्तर्गत 15 से 17 सितम्बर तक प्रतिदिन 8 गाँवों की यात्रा की गई। पहले दिन लोधिका तहसील, दूसरे दिन कोटड़ा सांगाणी तहसील तथा तीसरे दिन पड़धरी तहसील के गाँवों की यात्रा की गई। 24 सितम्बर को भी उचडी, वेजोदरी, जोजमेर, मधुवन, खंढेरा, रोजीया, वाटलिया तथा वेलावदर गाँवों में भी सम्पर्क कर संघ का संदेश दिया गया तथा जन्म शताब्दी कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया गया।
- 25 सितम्बर को नोखा के ढींगसरी गाँव में स्नेह मिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही।
- श्री क्षत्रिय युवक संघ की जानकारी पहुँचाने तथा जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम हेतु निमंत्रण देने के लिए विशेष शाखाओं का आयोजन होता रहा। 17 सितम्बर को चित्तौड़ जिले के बुद्धपुरा गाँव में विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन रहा। इसी दिन अजमेर जिले के जाजोता गाँव के

(शेष पृष्ठ 33 पर)

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर–2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा 20.05.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

उपनिषद् का मंत्र है। यह पूर्ण है, वह पूर्ण है, पूर्ण में से पूर्ण को निकालने पर भी जो बचता है वो भी पूर्ण है। यह पूर्ण है और जो पूर्ण है वो सत्य है। इस दृष्टिकोण से वह पूर्ण है जो हमको दिखाई नहीं देता है और यह पूर्ण है जो हमको दिखाई देता है अथवा हमारे पास में है, जिसका हम स्पर्श कर सकते हैं, वह भी पूर्ण है। वेद के ऋषि ने अपने अनुभव से जो बात आदिकाल में बताई....वह असत्य नहीं हो सकती, ऐसा सभी भारतवासियों का मानना है।

वह और यह क्या है? वह पुरुष है, यह प्रकृति है। दो भासित होती हैं, है एक ही। परमात्मा में से पूरा का पूरा संसार निकाल लिया जाए फिर भी परमात्मा पूर्ण का पूर्ण रहता है। क्षत्रिय युवक संघ के शिविर में हम यदि इसको खोज नहीं पाए हैं... तो जिन्होंने खोजा उन्होंने पाया... तो जिन्होंने खोजा वो असत्य नहीं हो सकता। पूज्य तनसिंह जी ने इसी बात को बार-बार दोहराया है। अपने गीतों में, अपने साहित्य में, अपने प्रवचनों में तो आप लोगों में से अधिकांश लोगों ने उनके प्रवचन नहीं सुने, उनको देखा नहीं, स्पर्श नहीं किया, सुना नहीं। तो उन लोगों के लिए यह सत्य है, यह वह है। तो जो उन्होंने कहा वह सत्य है और जो अब कहा जा रहा है, आप प्रवचनों में सुनते हैं, साहित्य में पढ़ते हैं, वह भी पूर्ण है क्योंकि यह कृति उसी की है।

तनसिंह जी के पास यह सब कहाँ से आया? जो ईश्वर प्राप्त व्यक्ति होते हैं, सब कुछ ईश्वर का पा करके फिर स्वयं ईश्वर ही बन जाते हैं। जानत तुम्हीं तुम्हीं होई जाई। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने यह कहा है- राम के लिए। हम कुछ गलतियाँ करते हैं स्वभाववश हम जो बाहर से लेकर के आए हैं वही यहाँ प्रकट हो रहा है और वो साधना के लिए आवश्यक नहीं है, बाधक है, लेकिन यह रहेगी। उनको दूर करने के लिए ना हम तनसिंह जी से पुकारेंगे ना परमेश्वर को पुकारेंगे, क्योंकि परमेश्वर हमारे अंदर ही विराजमान है। सारा प्रकाश, सारा ज्ञान हमारे अंतःकरण में है। वह हमारे हृदय में है और अनुभव करना चाहें तो थोड़ी देर बैठ करके सांस पर ध्यान रखिए। सांस आ रहा है, सांस जा रहा है। तो सांस भगवान नहीं है। सांस में प्रवाहित हो रहा है, वो परमेश्वर है। बहुत मुश्किल काम नहीं है। लेकिन हमने इसको आवश्यक नहीं. समझा। कई लोगों ने इसको प्राणायाम कह करके टाल दिया एक फिजिकल एक्सरसाइज कहकर टाल दिया।

योग और योगासन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि की जो प्रक्रिया बताई जाती है अष्टांग योग में, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है, वो पहले दो हैं यम और नियम। जो उनका पालन नहीं करते वे समझें यम का अर्थ है- सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि। ये पॉजिटिव है और नियम का अर्थ है यानी जो हमसे भूलें होती हैं उन पर नियंत्रण कैसे करें, उसकी वह एक विधि है। ये अलग से मैं कहीं उलझाना नहीं चाहता आपको। यदि देखना चाहें तो साधनापथ का 20वाँ अवतरण आप पढ़ लें, उसके बाद में दो-चार

(शेष पृष्ठ 11 पर)

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

क्षात्र धर्म का ह्रास होने पर क्या समाज, क्या राष्ट्र और क्या संसार यानी सारी सृष्टि का जीवन निश्चित रूप से गड़बड़ा जाता है। क्षत्रिय की जड़ता जन्य विकृतियों से सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त व सारी व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो जाया करती हैं। क्षत्रिय के ईश्वर प्रदत्त नियत कर्तव्य कर्म से भटकने पर ऐसी स्थिति बनती है। ऐसे अराजकता के माहौल में पथ विचलित व धर्म विमुख सुप्त क्षात्र शक्ति को क्षत्रियत्व का बोध कराने तथा उन्हें अपने नियत कर्तव्य कर्म व उत्तरदायित्वों का बोध कराने, समय की मांग और जगत की आवश्यकता बन कर पूज्य तनसिंह जी भारत भूमि में अवतरित हुए।

वे लोग सौभाग्यशाली हैं जो पूज्य श्री तनसिंह जी जैसे महापुरुष के समकालीन रहे हैं और वे लोग और भी सौभाग्यशाली हैं, जिनको उनके साथ काम करने का अवसर मिला और उनमें निरन्तर अविरल रूप से प्रवाहित होने वाले अपनत्व एवं स्नेह का पान किया।

आज अनेकों की यादों में पूज्य श्री तनसिंह जी समाय हुए हैं। उन अनेकों में एक स्वयं सेवक श्री चन्द्रसिंह जी भांगीवाद पूज्य श्री तनसिंह जी के साथ अपने बिताये उन क्षणों को याद करते हुए लिखते हैं,-

''मैं संघ के प्रारम्भिक काल से ही उनके साथ जुड़ा। उनके मिलते ही ऐसा अनुभव हुआ जैसे हम युगों के साथी थे। उत्तरोत्तर उनका स्नेह प्रगाढतर होता चला गया। उस अवधि के बारे में जब भी चिन्तन करता हूँ तो अनेकों घटनाएँ स्मृतिपटल पर आती हैं। उस समय कर्तव्य पथ पर सहयात्रा की, वे घटनाएँ सामान्य बातें थी, किन्तु आज वे पुनीत स्मृतियाँ हैं-इतिहास है।

''अगस्त, 1947 में झुंझुनू में आई.टी.सी. शार्दूल राजपूत छात्रावास में लगाया गया। उस समय छात्रावास भवन नहीं बना था। टीनशेड की अस्थाई कोटड़ियों की व्यवस्था मात्र थी। शिविर का वातावरण अपूर्व उत्साहपूर्ण था। नवयुवक तनसिंहजी का व्यक्तित्व एवं नेतृत्व सबके लिये प्रेरणास्पद था। वह वर्ष देश की आजादी का वर्ष था, घर-घर पर तिरंगे झण्डे को फहरा रहे थे। देश विभाजन एवं पाकिस्तान बनाने की राष्ट्रीय वेदना देशवासियों के दिलों में गम्भीर रूप से परिलक्षित हो रही थी।

''कुचामन ओ.टी.सी नारायणपुरा रेलवे स्टेशन तथा कुचामन शहर के बीच रमणीय वन्य प्रदेश में भैंरूतालाब पर बने भवन में लगा। भोजन, घोड़ों, बन्दूकों आदि की व्यवस्था ठाकुर साहब खूड़ की तरफ से थी। चांदमारी के अतिरिक्त फौज से सेवानिवृत रिसलदार मेजर साहब की देख-रेख में घुड़ सवारी का अनुभव अधिकतर स्वयंसेवकों के लिए एक नवीन तथा रोमांचक कार्यक्रम था।

''इस शिविर की विशेष बात यह थी कि ठाकुर साहब खूड़ उन दिनों में राजपूत समाज के राजऋषि नेता के रूप में जाने जाते थे तथा उन्होंने भी एक राजपूत संघ नाम की संस्था बना रखी थी। ठाकुर साहब मदनसिंहजी दांता उस समय समाज नीति में प्रवेश कर ही रहे थे। दोनों शिविर कार्यक्रमों में विशिष्ट व्यक्तियों के रूप में सम्मिलित होते रहते थे। ठाकुर साहब खूड़ की तरफ से यह प्रस्ताव था कि क्षत्रिय युवक संघ एवं राजपूत संघ को मिलाकर संस्था का कोई बीच का नामकरण कर दिया जावे।

''श्रद्धेय तनसिंहजी द्वारा विचार-विमर्श के समय यद्यपि मैं अल्पवय एवं कनिष्ठ ही था, लेकिन बचपन से ही विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति की आदत के कारण मैंने इस प्रस्ताव का स्पष्ट एवं तर्कसंगत

विरोध किया। शिविर काल में तनसिंह जी इस पर काफी गंभीरता से सोचते रहे, विचार-विमर्श दोनों तरफ होता रहा और अन्त में हम 'ना' पक्ष वालों के विचार को ही सही माना गया तथा नामकरण क्षत्रिय युवक संघ ही यथावत रहा। क्षत्रिय युवक संघ की महायात्रा की यह एक ऐतिहासिक घटना थी।

''शार्दूल राजपूत छात्रावास बीकानेर के कमरे में तनसिंह जी, आयुवानसिंहजी एवं हम कुछ स्वयंसेवक विश्राम कर रहे थे। कई बैठे हुए थे, कई लेटे हुए थे। तनसिंह जी ने अपना चश्मा उतार कर एक तरफ रख रखा था। अनजाने में ही मेरा पैर चश्मे से छू गया तो तनसिंह जी ने कहा- 'अरे मेरा चश्मा तोड़ोगे क्या; इतने में आयुवानसिंह जी ने विनोद किया- 'यह क्या कर रहे हो भाई? यह चश्मा तो गाँधी जी के तीन बंदरों, घड़ी, लाठी आदि की तरह रीलीक है।' रीलीक स्मृति चिन्ह मरणोपरान्त होते हैं। अत: तनसिंह जी समेत सभी ठहाका लगा कर हँस पड़े। सोचता हूँ तब वह विनोद मात्र था, आज यह वास्तविकता है। उस महापुरुष का चश्मा, कलम, डायरियाँ, कुर्सी, मेज, जन्म स्थान, निवास आदि उनके पावन स्मृति चिन्हों (रीलीक्स) को सुरक्षित एवं दर्शनीय रखने का दायित्व श्री क्षत्रिय युवक संघ का है ताकि भावी पीढी उनसे प्रेरणा ग्रहण करती रहे।

''महाराजा साहब हनुवन्तसिंह जी जोधपुर के असामयिक निधन के बाद आयुवानसिंह जी के दिल में भूतपूर्व महाराजाओं में से किसी को नेतृत्व के लिए आगे लाने की बड़ी लगन थी। उन्होंने इसके लिए महाराजा साहब करणीसिंह जी बीकानेर से विचार-विमर्श कर प्रयत्न करने की सोची। तनसिंह जी इस सम्बन्ध में विशेष आशावान नहीं थे। मैं भी उनसे सहमत था। फिर भी आयुवान सिंह जी ने प्रयत्न करना ही उचित समझा। बातचीत से पहले महाराजा साहब ने क्षत्रिय युवक संघ की विचारधारा से अवगत होना चाहा। अत: हमें महाराजा साहब से पहले मिलकर संघ की विचारधारा एवं कार्य प्रणाली से उनको अवगत कराने हेतु भेजा गया, फिर आयुवानसिंह जी वार्ता में सम्मिलित हुए। महराजा साहब ने जसवन्तसिंहजी तंवर को बुला रखा था। महाराजा साहब संघ की विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए तथा सोचने हेतु कुछ समय चाहा। अन्त में उन्होंने पूरे समाज के नेतृत्व सम्बन्धी भार को वहन करने की सहमति नहीं दी।

''जब मैं शार्दूल राजपूत छात्रावास बीकानेर की कार्यकारिणी का सचिव एवं छात्रावास का विद्यार्थी अधीक्षक था, तब इसी छात्रावास में नारायणसिंह रेड़ा एक सामान्य संकोची विद्यार्थी था। वह शाखा में आने लगा तथा धीरे-धीरे संघ विचारधारा के प्रति आकर्षित होने लगा। किन्तु मैंने उसमें एक सामान्य स्वयंसेवक से अधिक कोई विशेषता नहीं देखी। बीकानेर से बाड़मेर जाने के कई वर्षों बाद संघ के एक कार्यक्रम में मलसीसर हाउस जयपुर में मेरा नारायणसिंह जी से सामान्य शिष्टाचार के साथ मिलना हुआ। जब कार्यक्रम में उनका सम्बोधन प्रारम्भ हुआ तो मैं यह देखकर आश्चर्यचकित था कि वह सामान्य-सा स्वयंसेवक अब बड़ा प्रबुद्ध एवं प्रतिभावान रूपान्तरित होकर सारगर्भित विद्वतापूर्ण बौद्धिक दे रहा था। मैंने सोचा इस असाधारण प्रतिभा का स्रोत कहाँ है ? उसी समय एक सांवलासा दाढी युक्त चेहरा चिर-परिचित अंदाज में मंद-मंद मुस्कराता मानस पटल पर आया और समझते देर नहीं लगी कि यह शक्तिपात तो आदि संघप्रमुख से हुआ है। कहने की आवश्यकता नहीं कि तनसिंह जी ने अपने जीवन काल में कितने ही स्वयंसेवकों के जीवन प्रवाह में अपनी प्रेरणा से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर न केवल समाज सेवोन्मुख कर दिया, बल्कि वैचारिक रूप से भी आमूल चूल परिवर्तन कर दिया। ऐसा कोई तपस्वी ही कर सकता है। उनका यह शक्तिपात आज भी उन्मुक्त रूप से सतत हो रहा है, केवल पात्र बनने आवश्यकता है।''

(क्रमश:)

भक्त-चरित्र

– रश्मि रामदेरिया

ज्योति तेरी ही निहारूं, पूर्ण श्रद्धा से पुकारूँ।
मेरे अरमानों के सपने, अपने चरणों में धरालो।।
वंदना के गीत मेरे, भाव की गरिमा मिलो लो।

इन पंक्तियों में पूज्य तनसिंह जी ने एक भक्त की अपने भगवान, गुरु अथवा श्रद्धेय के प्रति भाव भरी प्रार्थना को गाया है, तो आओ, हम भी ऐसे ही प्रभु के प्रति सच्ची भक्ति वाले भक्तों की भक्ति का रसास्वादन कर लें।

जिनको श्री राम का वरदान है, गढ़ा जिनकी शान है।
बजरंगी जिनकी पहचान है, वो संकट मोचन हनुमान है।।
हे दुःख भंजन! मारुति नंदन! सुन लो मेरी पुकार,
पवनसुत, विनती बारम्बार।।

सर्वप्रथम भक्त शिरोमणि हनुमान का नाम लेते ही सारे दुःख दूर हो जाते हैं। जब तक इस धरती पर प्रभु श्रीराम का नाम रहेगा, तब तक राम भक्त हनुमान जी का नाम साथ ही रहेगा। वे हर समय श्रीराम एवं माता जानकी की सेवा में तत्पर रहते थे। श्रीराम के अनन्य भक्त थे। हनुमान जी, एक वरदान के कारण भोलेनाथ शिव के अंश को पवन देव द्वारा माता अंजनी की कोख में स्थापित करने से उत्पन्न हुए, जिससे पवनपुत्र एवं शिव के रुद्र अवतार माने गए। इनके पिता का नाम केशरी था।

इसी तरह श्रीमद्भागवत में सखा भक्त सुदामा का चरित्र कथा के अंतिम दिन सुनाया जाता है। इस चरित्र में श्रीकृष्ण ने यह संदेश दिया, कि मित्रता में राजा व रंक का भेद नहीं रहता।

श्री कृष्ण पग पखारत, औ रुकमणि जल डारत।
औ प्रिय सुदामा प्रयोजन, कहै को मन मारत।।

स्वयंभु मन्वतर में महायोगी महर्षि कपिल हुए। उन्होंने अपनी माता देवहूति को ज्ञान प्राप्ति के लिए भक्ति योग एवं अपने शिष्य आसुरी को सांख्यदर्शन का उपदेश दिया।

जो लोग प्रभु को पाना चाहते हैं, उन्हें वाणी, मन, इंद्रियों की पवित्रता और एक दयालु हृदय की जरूरत है।

साधु बने बने तो मोहमाया छूटे, वैरागी बने तो छूटे तन
जो हरि से सच्चा प्रेम होवे, छूटे सारे जग बंधन।।

अंतरिक्ष में उत्तर दिशा में एक तारा है, जिसका नाम ध्रुव है। इस तारे का नाम अपनी कठिन तपस्या में अडिग भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाले परम भक्त बालक ध्रुव के नाम पर रखा गया है। प्रभु ने प्रकट होकर ध्रुव को वरदान दिया कि,-

करो बहुकाल तक राज्य यहाँ, मिलेगा अंत समय ध्रुवलोक।
जहाँ विमल सुख शांति को भोग, नहीं रोग व्याधि दुःख-शोक।।
कर्म अच्छे हो तो, वही धर्म बन जाता है।
ऐसा इंसान प्रभु का, भक्त बन जाता है।।

राजा परिक्षित भी भगवन के भक्त थे। श्रृंगी ऋषि के श्राप से सर्प काटने से उनकी मृत्यु होने वाली थी। राजा को मालूम था, कि सातवें दिन उनकी मृत्यु निश्चित है, तब भागवत कथा का अमृत रस पीकर भव बंधन से मुक्त हो गए।

भक्ति का अर्थ, प्रभू तत्त्व परमसत्ता को समझना व जीवों में सतत् प्रेरणा हो। भक्ति के अंदर आनंद है। भजन करना, सेवा करना, पूजा-अर्चना करना, श्रद्धा, दया, प्रेम करना ही भक्ति है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है, 'आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी, ये चार प्रकार के भक्त मेरा भजन किया करते हैं।' प्रभु को पाने का सबसे उत्तम एवं सरल उपाय प्रेम ही है। प्रेम के बिना

इंसान कितना ही जप, तप दान कर ले, वह प्रभु को नहीं पा सकता। दुनिया का कोई भी साधन, जीव को प्रभु का साक्षात्कार नहीं करा सकता। भाव-विभोर होकर, प्रेम रस में मग्न होकर, अत्यंत जागृत अवस्था में भक्ति करनी चाहिए। आंतरिक मानसिकता एवं भाव दशा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। परमात्मा हमारी भावना देखते हैं। अपने मन को स्थिर करके ध्यान साधना द्वारा ही परमानन्द की प्राप्ति की जा सकती है। कलयुग में प्रभु प्राप्ति का सबसे सरल साधन उसका नाम जपना है। जो भी खाए, पीए, पहले प्रभु को भोग लगाए। जो भी कार्य करे, अहं भाव को तजकर प्रभु को अर्पण करके करे। टाटा, बाय-बाय की जगह राधे-राधे कृष्ण-कृष्ण बोले। फोन पर 'हेलो' की जगह राम-राम बोले। ऐसा अपने बच्चों को भी सिखाएँ।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में कहा है, ''मोरे मन प्रभु अस विश्वासा, राम ते अधिक राम कर दासा।'' अर्थात् भगवान ने भक्तों का मान रखने के लिए अपने से अधिक भक्त को स्थान दिया है। कृष्ण भक्त और कवियित्रि मीरां बाई को कौन नहीं जानता। उन्होंने कृष्ण भक्ति के स्फुट पदों की रचना की। संत रैदास (रविदास) उनके गुरु थे। मीरां बाई पूर्व जन्म में श्री राधा रानी के गाँव बरसाना के पास चिकरौली गाँव की गोपी थी। मीरां बाई बचपन से ही कृष्ण भक्त थी। उन्होंने राज-पाट व महलों के सुख त्याग कर वैराग्य को अपनाया, संसार के मोह से दूर, हरि कीर्तन में अपना जीवन बिताया।

कर्मा बाई, संत तुकाराम, नर सिंह मेहता जैसे अनेक भक्तों का जीवन भगवान को समर्पित था। ऐसे अनेक भक्तों के चरित्र का जितना भी गुणगान करें, कम है। अपने बालकों को भक्त प्रह्लाद, भरत, तुलसीदास, माता शबरी, धन्ना जाट, श्री वल्लाभाचार्य जी, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, वाल्मिकि जी, सूरदास जी जैसे भक्तों का जीवन चरित्र सुनाना चाहिए।

भक्ति स्वतंत्र है, और सब सुखों की खान है। किंतु सत्संग (संतों का संग) के बिना प्राणी इसे पा नहीं सकता और बिना पुण्य समूह के संत नहीं मिलते। सत्संगति ही संसृति (जन्म मरण के चक्र) का अंत करती है।

मन तुलसी को दास हो, हो वृंदावन धाम।
सांस-सांस राधा बसे, रोम रोम में श्याम।।

मानव देह पाकर जो भगवत प्राप्ति को अपने जीवन का ध्येय बना लेता है, और सदा इस मार्ग पर अग्रसर रहता है, उसी का जीवन सफल है। प्रभु का एक भी नाम, उसकी सेवा में किया गया कोई भी काम व्यर्थ नहीं जाता। प्रभु का एक-एक नाम एवं उसकी सेवा में बिताया एक-एक पल अनमोल है।

जय संघशक्ति!

पृष्ठ 7 का शेष

चलता रहे मेरा संघ

और पढ़ने की आवश्यकता हो सकती है तो पढ़ें। वह योग हममें घटित हो रहा है और योग का अर्थ होता है मिलन। तो भौतिक चीजों का मिलन है वो होता है और चला जाता है। यह पारलौकिक मिलन है, जीव का ब्रह्म से मिलन है। हम जीव रूप में इस शरीर को धारण किए हुए सारे उपक्रम करते हैं। कई बार हमारा किया हुआ होता है तब हमको लगता है, हम अपने आप को शाबाशी देते हैं कि भई हमने किया तो हो गया। पर करवाता वही है। सांस हम लेते नहीं हैं। सांस मत लो क्या होगा? सांस नहीं आएगा तो क्या होगा? तो इन चीजों को ध्यान में रखकर के जो साधना कराई जा रही है.. सदैव जागृत रहें... आज के मंगल प्रभात में आपकी जागृति के लिए यही मंगल संदेश। परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप उसमें उतरें और प्राप्त करें।

मौन की शक्ति

– आचार्य महाप्रज्ञ

हम बोलने से परिचित हैं। बोलने का क्या मूल्य है-इसे भलीभांति जानते हैं। हमारा सारा व्यवहार बोलने से चलता है। किन्तु न बोलने का भी अपना मूल्य है। जितना बोलने का मूल्य उतना ही न बोलने का मूल्य है और एक अवस्था में शायद बोलने की अपेक्षा न बोलने का मूल्य अधिक है। उस मूल्य को हमें समझना है।

दो ज्ञानी बात नहीं करते। भाषा का प्रयोग वहाँ होता है जहां एक बहुत समझने वाला है और दूसरा कम समझने वाला है। जहाँ दोनों ज्ञानी हैं, बराबर समझने वाले हैं, वहाँ भाषा का प्रयोग व्यर्थ है।

मौन के लिए बहुत बड़ा अवकाश है कि हमारा ज्ञान बढ़े। ज्ञान तब बढ़ेगा जब भाषा का व्यापार कम होगा। जितना भाषा का प्रयोग अधिक होगा, हम अधिक बोलेंगे तो हमारे अन्तर्ज्ञान में बाधा आएगी। चंचलता बाधा उत्पन्न करती है। भाषा का पहला काम है चंचलता उत्पन्न करना। पूज्यपाद ने लिखा है 'जनेभ्यो वाक् ततः स्पंदः'– जब सम्पर्क होता है तब वाक् होती है। अकेले में तो कोई वाक् नहीं होती। अकेले से कोई बोलता नहीं। अकेले में बोलने की कोई जरूरत नहीं होती। जब दूसरा कोई होता है, सम्पर्क होता है, तब वाक् होती है। वाणी के बाद होती है चंचलता। बोलने से पहले चंचलता और बोलने के बाद चंचलता। जब हम बोलते हैं तो सबसे पहले मन को चंचल करना पड़ता है। मन को चंचल किए बिना कोई आदमी बोल नहीं सकता। क्योंकि जो कुछ वह कहना चाहता है, पहले वह सोचता है, फिर बोलता है। बोलने का मतलब है कि पहले मन को चंचल करो, फिर बोलो। बोलने से पहले भी चंचलता और बोलने के बाद भी चंचलता। बोलना स्वयं एक चंचलता है। बोलने के बाद, उसका फिर जो चिन्तन होता है, वह स्वयं चंचलता उत्पन्न करता है। बोलने से पहले चंचलता, बोलते समय चंचलता और बोलने के बाद भी चंचलता। यह सारा चंचलता का व्यवहार है। यह व्यवहार अन्तर्ज्ञान में बाधा उपस्थित करता है। जो भी अन्तर्ज्ञान की साधना करने वाले साधक हुए हैं, उन्होंने कम-से-कम भाषा का प्रयोग किया है। वे अधिक समय मौन रहे हैं।

वचनगुप्ति का एक परिणाम है-निर्विचारता। हम ज्यादा इसीलिए सोचते हैं कि हम बोलें, दूसरों को कहें। या जब बोलने की बात हमारे मन में आती है तब हम सोचते हैं। जब हम मौन कर लेते हैं तब निर्विचारता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वचनगुप्ति का बहुत बड़ा लाभ है-निर्विचारता। नहीं बोलने का एक मूल्य है निर्विचारता।

नहीं बोलने का दूसरा मूल्य है विवादमुक्ति। मौन हो जाओ, विवाद अपने आप समाप्त हो जाएंगे। हमेशा विवाद या लड़ाई होती है बोलने के कारण। एक बोलता है और यदि दूसरा मौन हो जाता है तो लड़ाई समाप्त हो जाती है। 'अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेव विनश्यति'– आग जल रही है। उसे खाने के लिए घास नहीं मिला, भोजन नहीं मिला, तो वह स्वयं बुझ जाएगी, जलेगी नहीं। वैसे ही दो व्यक्ति बोलते चले जाते हैं तो लड़ाई की आग भभकती है, बुझती नहीं, शांत नहीं होती। लड़ाई की आग को ईंधन मिलता रहता है, भोजन मिलता रहता है और वह जलती रहती है। एक बोलता है और दूसरा यदि मौन हो जाता है, तो आग को घास नहीं मिलता, वह अपने आप शांत हो जाती है, बुझ जाती है। मौन का दूसरा लाभ है विवाद-मुक्ति।

मौन का तीसरा लाभ है अहं मुक्ति। नहीं बोलने से अहंकार समाप्त हो जाता है। बोलने से अहंकार बढ़ता है। मैं अच्छा बोलता हूँ- यह अहं है। 'भाषा पर मेरा प्रभुत्व है'- यह भी अहं है। इनसे अहं को बढ़ावा मिलता है। भाषाओं का जितना ज्ञान होता है, उतना ही अहं बढ़ता। भगवान् महावीर ने इसीलिए कहा-'न चित्ता ताए भासा, कओ विज्जाणुसासनं'- भाषा हमें त्राण नहीं देती। नाना प्रकार की भाषाएँ त्राण नहीं बनतीं। मैं संस्कृत जनता हूँ, हिन्दी जानता हूँ, प्राकृत जानता हूँ, अंग्रेजी जानता हूँ, फ्रेंच जानता हूँ। इस प्रकार भाषाओं का अहं बढता है। भाषा बोलने का माध्यम है, विचार को व्यक्त करने का माध्यम है, वह हमारे अहंकार का माध्यम बन जाती है।

नहीं बोलने का एक बहुत बड़ा मूल्य है-सत्य की सुरक्षा। नहीं बोलने से सत्य की पूरी सुरक्षा होती है। अवक्तव्य, अनिर्वचनीय, अव्याकृत- ये शब्द सत्य की सुरक्षा करते हैं। एक कहता है-अस्ति अर्थात् है। दूसरा कहता है-नास्ति अर्थात् नहीं है। दोनों की दो दशाएँ हैं। विवाद की स्थिति आ जाती है। महावीर ने कहा जो कहता है अस्ति, वह भी सही नहीं है और जो कहता है नास्ति, वह भी सही नहीं है। दोनों गलत हैं। दोनों सही तब हो सकते हैं जब दोनों अपने-अपने कथन के साथ अपेक्षा जोड़ देते हैं और कहते हैं कि इस दृष्टि से, इस अपेक्षा से यह है और इस अपेक्षा से यह नहीं है- स्यादस्ति, स्यान्नास्ति। जब स्यादस्ति कहने से भी काम नहीं चलता और स्यान्नास्ति कहने से भी काम नहीं चलता तब स्याद् अवक्तव्य कहना होता है। यह मानकर चलो कि सत्य नहीं कहा जा सकता, संपूर्ण सत्य कहा नहीं जा सकता, सत्य की प्रकृति, स्वभाव ही ऐसा है कि वह कहा नहीं जा सकता । हम जो कहते हैं वह सत्य का एक अंशमात्र होता है। हम अंशमात्र का कथन करते पूरे सत्य के प्रति शायद अन्याय ही करते हैं। एक दृष्टि से इस बात को मानकर ही तुम कहो कि पूरा सत्य नहीं कहा जा सकता। यह गूंगे का गुड़ है। वह स्वाद का वर्णन नहीं कर सकता।

मैं यह मानता हूँ कि सामान्य आदमी को बोलना पड़ता है, बोले बिना उसका व्यवहार नहीं चलता, बोले बिना उसके जीवन की चर्या नहीं चलती। बोलना पड़ता है, यह एक बात है और बोलने को हमने अनिवार्य मान लिया, बोलने को हमने प्राथमिकता दे दी-यह दूसरी बात है। इन दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। क्योंकि जब हमने बोलने को प्राथमिकता दे दी, बोलने को अनिवार्य मान लिया तो हमारी मानसिक क्षमता भी कम हो गई। जो बात मन के द्वारा कही जा सकती थी, उसे कहने में हम असमर्थ हो गए। जो मन की शक्ति थी उसमें बहुत बड़ा अन्तर आ गया।

आज के पेरासाइकोलॉजिस्ट टेलीपैथी का प्रयोग करते हैं। टेलीपैथी का अर्थ है-विचार संप्रेषण। एक आदमी हजार कोस की दूरी पर है। उससे बात करनी है, कैसे हो सकती है? आज तो टेलिफोन और वायरलेस का साधन है। घर बैठा आदमी हजारों कोसों पर रहने वाले अपने व्यक्तियों से बात कर लेता है। प्राचीन काल में ये साधन नहीं थे, तो वे दूर-स्थित व्यक्तियों से बात कैसे करते ? वे टैलीपैथी, विचार-संप्रेषण के द्वारा बातचीत कर लेते। प्राचीन काल में टेलीपैथी शब्द नहीं था। यह अंग्रेजी का शब्द है। उस समय प्रचलित शब्द था-विचार संप्रेषण। इसका अर्थ है-यहाँ बैठे-बैठे अपने विचारों को हजारों कोस दूर भेज देना। यहाँ एक योगी है। उसका शिष्य पांच हजार मील की दूरी पर है। योगी उसे कुछ बताना चाहता है, उससे बातचीत करना चाहता है। अब वह कैसे बात करे ? आधुनिक साधन तो थे नहीं उस समय । किन्तु उस समय विचार-संप्रेषण की साधना की जाती थी। इस साधना में निष्णात ध्यान की मुद्रा में बैठता और अपने विचारों की तरंगों को निर्दिष्ट दिशा में संप्रेषित

करता। विचार की तरंगें शक्तिशाली होकर वहाँ पहुँच जाती, जहाँ साधक उन्हें पहुँचाना चाहता। वहाँ के व्यक्ति का दिमाग रिसीवर का काम करता। वह उन तरंगों को पकड़ लेता और उनके माध्यम से जान लेता कि कौन क्या कहना चाहता है। फिर यदि उसे उत्तर देना होता तो वह स्वयं ध्यानस्थ होता, ध्यान करने बैठता और विचारों की तरंगों को गुरु या इष्ट व्यक्ति के पास पहुँचा देता। विचार जान लिए जाते। यह प्रक्रिया थी बातचीत करने की। यह माध्यम था विचार-संप्रेषण का। इसके लिए मानसिक क्षमता के विकास की जरूरत होती थी। साधक मानसिक क्षमता बढ़ाने का प्रयत्न करते थे।

हमने बोलने की बहुत आदत डालकर मानसिक क्षमता को कमजोर किया है, गंवाया है। आज मानसिक क्षमता को विकसित करने का कोई प्रयत्न नहीं हो रहा है। इसके भी दो कारण हैं। एक तो हमने बोलने को प्राथमिकता दे दी। बोलने का कुछ काम पत्राचार से करने लगे। आज तो संचार के इतने साधन विकसित हो चुके हैं कि उसके लिए मानसिक क्षमता की कोई जरूरत ही महसूस नहीं होती। बोलने की जरूरत तब ज्यादा महसूस होती है जब मानसिक क्षमता से हमारा विश्वास उठ जाता है। यदि हम न बोलकर अपनी मानसिक क्षमता को विकसित करें तो ऐसा भी हो सकता है कि बिना कहे भी बात समझ में आ सकती है। 'गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशया:'- जिस गुरु की आत्म शक्ति प्रबल होती है, वह मौन बैठता है। शिष्य आते हैं, नाना प्रकार के संदेह लेकर गुरु के पास बैठेते हैं। गुरु की सन्निधि प्राप्त करते हैं। उनके सारे संशय नष्ट हो जाते हैं, उनका समाधान हो जाता है। उनको अपने-अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है। क्योंकि वहां मन की भाषा चल रही है। मन अपना काम करता है, संदेह मिट जाता है।

नाना प्रकार की विद्याओं का अनुशासन, जो सारा का सारा बोलने के माध्यम से और भाषा के माध्यम से होता है, वह भी आपकी सुरक्षा नहीं कर सकता। आपकी अपनी सुरक्षा अपने ज्ञान में है, अपने आप में है। यह ज्ञान बोलने से प्राप्त नहीं होता किन्तु नहीं बोलने से अवश्य ही प्राप्त होता है। उस ज्ञान को स्वयं बोलने की जरूरत नहीं, किसी भाषा की जरूरत नहीं।

दुनिया में अनेक आत्मज्ञानी लोग हुए है। अंग्रेजी भाषा जानने वाले भी आत्मज्ञानी हुए है, फ्रेंच जानने वाले भी आत्मज्ञानी हुए हैं, हिन्दी जानने वाले भी आत्मज्ञानी हुए हैं, संस्कृत और प्राकृत जानने वाले भी आत्मज्ञानी हुए हैं, और ऐसे भी लोग आत्मज्ञानी हुए हैं जो किसी भी भाषा को पूरी नहीं जानते, पूरी नहीं समझते। ऐसे लोग भी आत्मज्ञानी हुए हैं जो अपने विचारों को प्रकट करना नहीं जानते, भाषण देना नहीं जानते, अपनी बात पूरी कहना नहीं जानते। आत्मज्ञान का भाषा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। भाषा बाहर से आती है और आत्मज्ञान का स्रोत भीतर से फूटता है। ●

मन एक उपजाऊ खेत की भान्ति है। यहाँ आप जैसा बोएंगे, वैसा काटेंगे। अगर सुन्दर विचार उगायेंगे तो आपका मस्तिष्क समृद्ध बनेगा। दुर्विचार इसी मस्तिष्क को झाड़ झंखाड़ से भरा जंगल बना देंगे। बबूल के बीज बोने से गुलाब पैदा नहीं होते।

- स्वेट मार्डेन

बांदनवाड़ा का अन्तिम मेवाड़-मुगल संघर्ष

– डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत

मेवाड़ राज्य का दिल्ली सल्तनत एवं मुगल शासकों से निरंतर संघर्ष बना रहा। इसी क्रम में महाराणा अमरसिंह द्वितीय के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (1711-1734 ई.) के शासनकाल में भी मेवाड़ का मुगल शासक से बांदनवाड़ा का युद्ध हुआ जिसमें मेवाड़ विजयी रहा और मुगल सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। इस युद्ध में हुए त्याग और समर्पण का प्रकाशन अभी तक कहीं नहीं किया गया है। मेवाड़ राज्य के उत्तरी सीमान्त पर स्थित बांदनवाड़ा कस्बे (वर्तमान अजमेर में) में हुए इस युद्ध में मेवाड़ के अनेक योद्धाओं ने अपना पराक्रम दिखाया। युद्ध में मेवाड़ के महाराणा लाखा के द्वितीय पुत्र अज्जा के पुत्र सारंगदेव के वंशज रावत महासिंह सारंगदेवोत का बलिदान भी शौर्यपूर्ण रहा। उन्होंने मेवाड़ की सेना का नेतृत्व करते हुए मुगल मनसबदार रणबाज खान मेवाती को मार डाला। इन सारंगदेवोत अज्जावतों की जागीरी में मेवाड़ राज्य में कानोड़ व बाठेड़ा ठिकाने रहे। यह युद्ध अभी तक अनुसंधान का विषय बना हुआ है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बांदनवाड़ा युद्ध पर इतिहास व भूगोल संबन्धी अनुसंधान कार्य का विस्तारपूर्ण वर्णन किया गया है।

भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित राजस्थान का दक्षिणी-पश्चिमी भू-भाग मेवाड़ राज्य के रूप में सुविख्यात रहा है। आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से मेवाड़ राज्य सदैव ही राजनीति का केन्द्र बिन्दु रहा। प्राचीन काल में मेवाड़ को मेदपाट कहा जाता था। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह तत्कालीन राजस्थान का एक बड़ा रियासती राज्य रहा। भारतीय संघ में विलय से पूर्व इसका क्षेत्रफल 12,691 वर्गमील (2,043.626 वर्ग कि.मी. या 22,032.92 वर्ग किमी.) था। यह वर्तमान राजस्थान में $23^0$49 से $25^0$28 उत्तरी अक्षांशों तथा $73^0$1 से $75^0$49 पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित एक विशाल क्षेत्र है।

राजनीतिक इकाई के रूप में मेवाड़ का विकास छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गुहिल अथवा गुहिलोत वंश की स्थापना के साथ हुआ। गुहिल वंश के संस्थापक गुहिल थे। इतिहासकारों तथा अभिलेख सामग्री के आधार पर गुहिल की वंशावली को अयोध्यापति श्री रामचंद्र के ज्येष्ठ पुत्र कुश से जोड़ा जाता है और इस आधार पर उन्हें सूर्यवंशी घोषित किया गया। गुहिलोत सिसोदिया शासकों ने मेवाड़ राज्य पर 7वीं शताब्दी से शासन करना प्रारंभ किया। मेवाड़ महाराणा हम्मीरदेव सिसोदिया (1326-1364 ई.) के पौत्र एवं महाराणा खेता (1364-1381 ई.) के पुत्र महाराणा लाखा (1381-1411 ई.) के द्वितीय पुत्र अज्जा के पुत्र सारंगदेव से उद्भूत सारंगदेवोत अज्जायत सिसोदिया शाखा प्रसिद्ध हुई। इस शाखा की जागीर में कानोड़ एवं बाठेड़ा ठिकाने शामिल रहे। कानोड़ ठिकाना मेवाड़ के सारंगदेवोत सिसोदिया सरदारों का प्रथम श्रेणी का 16 उमरावों के अंतर्गत मुख्य ठिकाना रहा है जो कि बाठेड़ा सहित इस शाखा का पाटवी अथवा मुख्य ठिकाना है। इसके अतिरिक्त अज्जा जी का शासन उत्तरी गुजरात स्थित ईडर पर भी रहा। रावत अज्जा के वंशज रावत भाणसिंह हुए जिन्होंने मगध (बिहार में स्थित औरंगाबाद जिला) में देवउमगा राज्य पर गुहिलोत

सिसोदिया सारंगदेवोत राजवंश की स्थापना की। रावत भाणसिंह के उत्तराधिकारी रावत जगन्नाथ सिंह एवं रावत मान सिंह हुए।

रावत मानसिंह के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र महासिंह 1690ई. में बाठेड़ा में गद्दी पर बैठे। 1707ई. में मुगल शासक औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद महाराणा अमरसिंह ने अपने खोए हुए क्षेत्रों अर्थात् पुर, बदनोर व मांडल आदि परगनों पर पुनः अधिकार कर लिया। मुगल शासक जहाँदारशाह (1711-1712ई.) के काल में जुल्फिकारखाँ जब वजीर बना तो उसने पुर व मांडल के परगने मेवाती रणबाजखाँ को और मांडलगढ़ का परगना नागौर के राव इन्द्रसिंह (जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के बड़े भाई अर्थात् नागौर शासक अमरसिंह राठौड़ के पुत्र) को दे दिया। परन्तु मुगल शाहज़ादा अजीमुश्शान इसके पक्ष में नहीं था।

रावत महासिंह

जैसे ही मुगल सेना की गतिविधियों की सूचना महाराणा को प्राप्त हुई, उन्होंने रावत महासिंह को आदेश दिया कि वे मेवाड़ की सीमा पर स्थित हुरड़ा की ओर ससैन्य प्रस्थान करें। इस प्रकार महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने महासिंह के नेतृत्व में एक सेना उससे मुकाबले के लिए भेजी। रावत महासिंह अपनी सेना लेकर हुरड़ा पहुँचे, उधर रणबाज़ ख़ाँ और उसकी सेना अजमेर से आगे बढ़ कर खारी नदी के तट पर आ गए। फिर बांदनवाड़ा में दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ। रावत महासिंह और उनके सहयोगियों ने बड़ी वीरतापूर्वक युद्ध लड़ा।

जब घमासान युद्ध होने लगा तो महासिंह ने रणबाज खाँ के हाथी के कुंभ स्थल पर कठोर प्रहार किया जिससे हाथी सहित नवाब भी युद्धक्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार जब रणबाज खाँ ने रणक्षेत्र से भागने का प्रयास किया....इस पर महासिंह ने कहा कि तू फौज का सेनापति होकर नामर्दों की तरह भाग रहा है। तू अपने मालिक को क्या मुँह दिखायेगा। अगर साहस और शौर्य रखता है तो मेरा मुकाबला कर......महासिंह के ललकारने पर रणबाज खाँ हाथी से नीचे उतर आया और युद्ध के मैदान में लड़ने लगा। उधर महासिंह भी अपने हाथी को छोड़ नीचे उतर आए और दोनों के बीच मुकाबला हुआ। रणबाज खाँ ने तलवार से जोरदार वार किया जो ढाल को काटते हुए तथा जिरह-बख्तर को चीरते हुए सीधे सीने में उत्तर गई। महासिंह ने हिम्मत करके उस पर हमला किया और उसके दिल-ए-जिगर को हिला डाला। रण भूमि में एक ओर रावत महासिंह धराशायी हुए और दूसरी ओर रणबाज खाँ जा गिरा। इस प्रकार दोनों ही युद्ध लड़ते हुए मारे गए। चूँकि कानोड़ तवारीख का लेखक मुस्लिम था अतः उसने अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से रणबाज खाँ को वीर दिखाने का प्रयास किया।

रावत महासिंह का स्मारक बांदनवाड़ा से करीब डेढ़ मील दूर बना हुआ है, जो आज भी उस वीर की याद दिला रहा है। महासिंह के प्रति सारंगदेवोत सिसोदियों एवं बांदनवाड़ा के जनमानस में बड़ी आस्था है और लोकदेवता के रूप उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। रणबाजखाँ के दो भाई रणांगण से भाग गये थे।

सामंत सिंह चुण्डावत (सलूम्बर-बम्बोरा) और महासिंह के भाई सूरत सिंह ने उनका पीछा किया और उन्हें मार गिराया। कोठारी भीमसी (बेंगू) स्वाभाविक जोश से लड़ा और युद्ध में काम आया। मोही के ठाकुर सबल सिंह भाटी ने भी अपना रक्त बांदनवाड़ा की धरती पर बहाया।

चान्दनमल भाणावत द्वारा लिखित बाठरड़ा का इतिहास में बांदनवाड़ा युद्ध का निम्नलिखित वृत्तांत प्राप्त होता है-......उदयपुर महाराणा और मुगल

बादशाह औरंगज़ेब की सन्धि हो गई। मेवाड़ के कुछ परगनों-हुरड़ा आदि जागीरों के पट्टे कपट से कुछ मेवातियों और मुसलमानों के नाम लिख दिये, उन मेवातियों में रणबाज खाँ, नाहर खाँ, दलेल खाँ आदि मुख्य थे। ये लोग फौज लेकर इन परगनों पर अधिकार करने आए, यह समाचार सुन कर दरबार की ओर से सेना भेज दी गई। शत्रुओं के आने और उनसे मुकाबला करने के लिए फौज भेजने की सूचना बाठरड़ा रावत महासिंह ने सुनी तो उसे बड़ा दुख हुआ कि मुझे इस युद्ध में नहीं बुलाया। इसका कारण ढूंढ रहे थे तभी महाराणा का नाहर मंगरा जाना हुआ, वहाँ जाकर महासिंह और छोटे भाई सूरत सिंह ने युद्ध की सूचना व युद्ध में नहीं भेजने का प्रश्न किया तो दरबार ने रावत महासिंह को वृद्धावस्था के चलते युद्ध में भेजना उचित न समझा, इसलिए आज्ञा न दी। परन्तु जब रावत महासिंह व रावत सूरतसिंह ने युद्ध में जाने की ज़िद्द की तो महाराणा ने दोनों को युद्ध में जाने की आज्ञा देदी तथा साथ ही रावत महासिंह को फौज का मुसाहिब (मुख्य सेनापति या संचालक) बना दिया। रावत महासिंह ने अपने छोटे भाई को लेकर हुरड़ा पहुँचकर मुसाहिबी (मुख्य प्रशासनिक मंत्रीपद) कार्य संभाला। इस युद्ध में सलूम्बर रावत के छोटे भाई सामन्तसिंह, बेगूं रावत, बदनोर ठाकुर, शाहपुरा राजाधिकार और बांसी रावत गंगदास आदि अपनी जमीयत के साथ फौज में शामिल हुए। 14 अप्रैल, 1711 को बांदनवाड़ा के निकट रणबाजखां और महासिंह के बीच युद्ध हुआ, जिसमें महासिंह ने रणबाजखां को मार डाला तथा महासिंह के घाव लगे जिससे दो दिन बाद वो भी वीर गति को प्राप्त हुए। हुरडा में जिस स्थान पर वो काम आए, उस स्थान पर आज भी छत्री (मृत्यु स्मारक) बनी हुई है। रणबाजखाँ के मरने से दलेलखाँ और नाहरखाँ भी मैदान छोड़कर भागे तो सलूम्बर के सामन्तसिंह व बाठरडा के सूरतसिंह ने उसका पीछा किया और उनको मार डाला, परन्तु आज तक पता नहीं कि किसने किस-किस को मारा, क्योंकि फौज वाले वहाँ पहुँचे तो उनके पूछने पर दोनों ने एक-दूसरे को इस कार्य का श्रेय दिया। इस युद्ध में मेवाड़ विजयी रहा। विजय आक्रमण का वृत्तान्त महाराणा को पता चला तो बड़े प्रसन्न हुए। मुगल शत्रु सेना के मुखिया रणबाजखाँ को मारकर युद्ध में काम आने पर बाठरड़ा रावत महासिंह के बेटे सारंगदेव को एक लाख आय की बाठरड़े की जागीर के बदले कानोड़ की जागीर दी गई।

अब प्रश्न उठता है कि दूसरे शत्रुओं को किसने मारा, फौज वालों ने बताया कि दोनों सरदारों को सामन्तसिंह व सूरतसिंह ने मारा। जब उनसे पूछा तो दोनों ने एक-दूसरे को दुश्मन को मारने वाला बताया, दोनों सरदार परम स्नेही पगड़ी बदल भाई थे, इसलिए इस शौर्यपूर्ण कार्य की प्रशंसा व श्रेय वे एक दूसरे को देना चाहते थे। जब महाराणा इन्हें एकलिंग जी (नागदा) भी ले गये तब भी इन्होंने नहीं बताया तो विवश होकर दोनों को 50-50 हजार की जागीर दी गई। सलूम्बर रावत के छोटे भाई सामन्तसिंह को 'मुण्डकटी' (बलिदान के रूप में अर्थात् युद्ध में वीरतापूर्वक मृत्यु की प्राप्ति) में 50 हजार वार्षिक आय की बम्बोरा जागीर दी और रावत सूरत सिंह को वही 50 हजार वार्षिक आय की बाठरड़ा की जागीर मिली। बाठेड़ा इतिहास (भाणावत संग्रह) में सामंत सिंह चुण्डावत को मुण्डकटी में बम्बोरा जागीर मिलना लिखा है जो कि गलत है क्योंकि उनकी वीरता से प्रसन्न होकर महाराणा द्वारा यह जागीर उनको मिली थी और युद्ध के बाद भी वे जीवित थे।

''श्री याद ख्यात की'' में रावत महासिंह और नवाब रणबाजखाँ का युद्ध वर्णन–

इतिहास जानने के साधनों में ख्यातों का अत्यधिक महत्त्व रहा है। ख्यातों में प्रायः प्रसिद्ध राजपूत राजवंशों की स्थापना, राजाओं का वंशक्रम, राज्यक्रम या शासन काल सहित युद्धों, निर्माण कार्य आदि का वर्णन होता है। 'ख्यात' को पीढ़ियावली व वंशावली का विकसित रूप कह सकते हैं जिनमें राजनीतिक पक्षों सहित सांस्कृतिक-आर्थिक विवरण भी उल्लिखित होता है। राजस्थान के विभिन्न राज्यों की भाँति उन राज्यों से सम्बन्धित कई ठिकानों में भी ख्यातें लिखवाई गई थी। मेवाड़ राज्य के कई ठिकानों में ख्यातें लिखवाई गई, जैसे कि कानोड़, देवगढ, सलूम्बर, बाठेडा, बदनोर इत्यादि। 'कानोड़' मेवाड़ का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था। ख्यात हमेशा ख्याति या प्रशंसा में लिखी जाती थी। कानोड़ ठिकाना दस्तावेज में 'श्री याद ख्यात की' के नाम से एक ख्यात लिखी गई मिली है किन्तु ख्यातकार का नाम एवं ख्यात पूर्ण करने की किसी तिथि विशेष का कहीं पर भी उल्लेख नहीं है। फिर भी यह सुनिश्चित है कि रावत उम्मेदसिंह ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इसे लिखवाना प्रारम्भ किया था।

इस प्रकार बांदनवाड़ा में रावत महासिंह के नेतृव में हुए युद्ध का वर्णन 'श्री याद ख्यात की' में निम्नानुसार दिया हुआ है- रावत म्हासीघजी रा जगड़ा री पातसा अरंगजेब मेवाड़ उप्रे वा श्रीजी दवारे आव्या सो राणा जी श्री जेसीघजी की वार म्हे सो जेसीघ जी जगड़ो कीदो अर पातसा ने भगाओ (भगायो) ने फोज लूट लीदी ने पातसा रूपनगर वे नीकलो सो रूपनगर पण फोज को सज लेलीदो सो ऊठा सूं आबुजी गयो। अचलेसरजी रो ऊथापन करो ने पचे दली गओ (गयो) ने पाचे पातसा मेवाड़ हारेन गओ जीसु पादड़ी मेवाड़ ने सरद करणी वीचारी सो नवाब रणबाज खान हो सो वाने फकीर ओलीया री बदगी करी सो रसाणकर नवाब ने देवा लागो सो नवाब ली-दो न्ही के आपका प्रताप सु मारे रसाण हो रही हे हे पर आप वचन देवे तो मे मागु जद वचन दीदो के नवाब मागी के मारी जगड़ा म्हे पीठ न्ही फरे ओर फते होवे जदी ओलीये वर दीदो के तुमारे फते होगी अर कजा तो माफ नहीं हो सकती हे पण तुमारी पीठ न्हीं फरेगा। ओ (यो) वर ही सो पातसा या बात सामली सो पातसाने फोज मु साफ मेलो दो चार जगा सो फते करी जद हीने सारी फोज की मालकी दी दी अर फोज लाख 200000 दोय दे ने मेवाड़ उप्रे मेला ने हुकम कीदो के हमारी फोज मेवाड़ वारा लट (लूट) ली दी सो मेवाड कु बरबाद कर पातसाही (बादशाही) अमल कर दो सो ईपर फोज लेर नवाब रणबाजखा आओ (आयो) अर अठे म्हाराणाजी श्री सगराम सीघजी ने मालम हुई के नवाब रणवाजखान ने श्री पातसा औरगजे फोज ले मेला हे सो कसी धार ने सो मेवाड़ वगाड़े जी पर श्री जी फोज बंदी कर पधारणो वचारो जी पर उमरावा अरज की दी के पातसा सू काम पड़े जद कीने कीने लेजावा या कर श्री जी ने तो नारामंगरा (नाहरमंगरा) सु हाजरी लेन पाचा पधारा ने फोज हरले आवी ने वठे सू म्हेता मालदासजी श्री जी म्हे अरज लखी के म्हे तो कागद मे ले दसगत वाच दीवाण म्हासीघ ने फोज म्हे मेले जद भाजे तुरकाण असी अरज आवी सो रावत म्हासीघ जी के कारी तेज री आवती जी सू श्री जी आगी काडी ने चीती अरज श्री जी वाचता ने रावत जी जाणे गआ (जान गये) सो अरज करदू बोले ने चड़ा सो पाधरा फोज म्हे पधारा ने दुजे दन पटाण तारपा (नाहरखाँ) फोज म्हे आवो नजर बाज वे ने जीने रावतजी दो ओ सो (दुआसूँ दोनों ओर) बलावे हुकम कीदो के फेर वारी पात्र जादा कीदी ने दुजे दन

फोज म्हे हैलो पडावो सो जी रे धरम पुन करणो वे समान सपाड़ो सो करजो परसु जगडो हे या करे ने दुजे दन रावत सुरतसीघजी बाटरो (बाठरड़ा), रावत सामत सीघजी बबोरो (बंबोरा) का तराव (तालाब) में सनान कर रआ जतरे पातसा री फोज म्हे थी असवार नवाब नारषा लालषा (नाहरखाँ, लालखाँ) फोज देषवा आवा ने रावतजी ढाबे न समाचार कआ (कहे) के तुम कबाण वावो जीप कबाणो वावो सो वरडो म्हे सा दाग डराओ प आपणा सरदार कओ के नमतो कवाणो वावो हम गोरी (गोली) वावे जी म्हे बदे जी री पात्र रेवे जी पर साड़ी माङ दो ही जणा 8 आठ फेर कीदा जी म्हे वणा ता कबाणा सात वावा जत्रे आपणे सीरदार आट गोरा (आठ गोला) वावी जीरो हाजरी देष ने कओ के असा आदमी हे जद तम हार कबी न्हीं आवेगा आ केर पाचा फरगआ-.....अर पातसा री फोज को नजरबाज नबाबा में लो फकीर वे ने रावतजी ने देषवा आव्यो सो वीने ओरष लीदो सो बुलावे अर षात्री करी ने हुकम कीधो की पातसा की तरफ सु थाने मेल्या हे ने माने श्री द्रवार की त्रफ थी मेला हे सो अब दो ही त्रफो लुण ऊजार देणो हे सो अब रणबाजषान न केवो सो को तरे अब काची न्ही वचारे या केर हुरडा सु जुद वे वा लागो सो जगडो सो बेता येता बेगम (बेगें) से कोठारी वरदभाणजी जमीन लेने हाजर वो जी पर म्हासीघजी कओ के बेगम सु रावतजी तो आआ (आया) न्ही ने थे आज सो अटे लेषा चोषा परा लाटणा (लेखा-चोखा, खरा लाटना) हे न्ही जी पर अरज कीधी के रावत जी तो नही पधारया जी को मारो जोर नहीं अर मासु बंदगी हुकम मुजब मुड़ी (मै भी) ऊठाऊगा यो के रे (यह कह कर कोठारी बी गौडा ऊठावा अर जगड़ो करयो ने जगड़ो कर पाचो आओ रावतजी सु मुजरो कीधो जी पर हुकम कीदो के थारो भरोसो हो जसी कर देषाही अर भाटी म्हासीघजी मोड़ी वाला बी सामल हा जगड़ा म्हे सो जगड़ो वेरओ जी वगत रावत म्हासीघजी आपका सात न मुड़ा गेले र सारी फोज ने दाकल ने गोडा आगा कीधा ने तरवार चलाड़ी सो मेवातियां री फोज ने धकाओ हुरडा सु वाधाणवाडा (बांधनवाडा या बांदनवाडा) रा गोर म्हे ले गआ अर अठे दो त्रफी फोज घेत पड़ी रावत गंगादासजी बानसी (बानसी) वाला हा सोडी ता पाचा फरागन रावत म्हासीघजी रे ने रणबाजखाँ रे फोज को जगड़ो वे रओ जी वगत रावत म्हासीघजी नवाब केबादी के से चेटी रे ने जगड़ो कु करा अर फोज कु तोड़ा वे हे अब ता डीला डील भडणो (भिड़ना) हे सो हाती सु उतरे ने जगहो करा सो रावत म्हासीघजी भी उतर्या ने रणबाजखाँ भी उतर्या ने रावत म्हासीघजी कहीं रणबाजखाँ ने सो तु चलाओ ने आवो सो तु वावजी पर रावतजी कओ मु बाऊगो तो थारे मन म्हे रे जावेगा कारण थु मेवाड़ लेबा रे वासते आवो हे जी सु थने हीज पेला (पहले) बाडी (चलानी) चावे सो असी मनवार हुडी ने नवाब पेला रावत म्हासीघजी पर तलवार बाडी सो (षग) खड्ग पर लागी अर म्हासीघजी का हात की तरवार नवाब रणबाजखाँ के वही जुलम कट अर वगतर फट अर मातो (सिर) कट गयो ओर नवाब मार लीओ अर रावत म्हासीघजी वी घेत पडया ओर मोड (मोही) भाटी म्हासीघजी बी काम आआ अर कोठारी बेगम (बेगूं) वाली बी काम आया अर कानोर की रजवार काम आदी जीमे अंतरा तो माजी काम आआ....वीगत...रावत म्हासीघजी घेत पडया....।''

इस लड़ाई में रावत महासिंहजी ने दो मदमस्त हाथियों को मारकर, मुगल मनसबदार रणबाजखां मेवाती को पराजित करके उसे यमलोक पहुँचाकर उसका मुगलाई पादशायी या पातसाई या बादशाही

(शेष पृष्ठ 24 पर)

भारतीय संस्कृति में नारी

– डॉ. प्रभाकर सिंह

जिस प्रकार प्रकृति के बिना पुरुष का कार्य अधूरा है, उसी प्रकार स्त्री के बिना मनुष्य का जीवन भी अपूर्ण ही है। प्राचीन भारतीय समाज में स्त्री का जैसा स्थान था वैसा किसी का भी स्थान समाज में नहीं था। वर्तमान में किसी ने उसे अपनी मिलकियत समझकर घर के अन्दर बन्द रखना ठीक समझा तो किसी ने उसे ऐश-आराम की चीज समझकर खूब चैन की बंशी बजाई, किन्तु प्राचीन भारत में नारी को समुचित स्थान दिया गया था।

स्त्री व पुरुष जीवन-गाड़ी के दो पहिए माने गये थे। दोनों पहिए साथ-साथ चलने चाहिए तभी जीवनगाड़ी अच्छी तरह चल सकती है, इसीलिए **'शतपथ'** ब्राह्मण में कहा गया है- **'पत्नी पुरुष की आत्मा का आधा भाग है। इसीलिए उसे अर्द्धांङ्गिनी कहा जाता है।'** इसी प्रकार महाभारत में कहा गया है कि- **'जब तक मनुष्य पत्नी को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह प्रजोत्पादक न होने के कारण अपूर्ण रहता है।'** इस प्रकार स्त्री-पुरुष एक ही पारिवारिक जीवन के दो पहलू हैं। पारिवारिक जीवन में दो प्रकार की जिम्मेदारियाँ रहती हैं- आन्तरिक जीवन सम्बन्धी और बाह्य जीवन सम्बन्धी, जिनमें क्रमशः स्त्री व पुरुष सम्बन्धित रहते हैं। पारिवारिक सुख तथा शान्ति के लिए जीवन के दोनों पहलुओं का सुचारू संचालन अत्यन्त ही आवश्यक है, यदि दो में से किसी एक में कमी रही तो जीवन दुःखमय हो जाता है। इसी कारण मनु ने यह उद्घोष किया है- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा (आदर) होती है वहीं देवताओं का निवास होता है। आर्य संस्कृति के उपासक हमारे मनीषियों ने भारतीय नारी की विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण बड़ी सुन्दरता के साथ किया है-

नारी कन्या रूप में :

नारी की प्रथमावस्था कन्या रूप है। संस्कृत वांगमय में नारी की इस अवस्था का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। संस्कृत महाकवि कालिदास आर्य संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। उन्होंने आर्य कन्या के आदर्श को पार्वती के रूप में प्रतिष्ठित किया है। आर्य कन्या को अदम्य, अजेय तथा जितेन्द्रिय बनाने का मुख्य साधन तप है। भगवती उमा शिव को पतिरूप में प्राप्त करने के लिए बड़ी विकट तपस्या करती हैं। अन्त में वे शिव को पतिरूप में प्राप्त करती हैं। गौरी की साधना भारतीय कन्याओं के लिए अनुकरणीय वस्तु है। भारतीय संस्कृति में नारी के कन्या रूप को बड़ा पवित्र माना गया है। उसके लालन-पालन में आर्य संस्कृति में समुचित व्यवस्था है।

गृहिणी :-

पारिवारिक जीवन का सम्बन्ध पूर्णतया स्त्री से ही रहता था। उसे परिवार के सब छोटे-बड़ों की चिन्ता करनी पड़ती थी और अतिथि सत्कार के दायित्व को भी पूरा करना पड़ता था।

आर्य संस्कृति में समग्र घरेलू बातों की जिम्मेदारी स्त्री पर ही रहती थी। महाभारत शान्ति पर्व में उल्लेख है- **'घर घर नहीं है, गृहिणी घर कही जाती है'** मनुस्मृति में गृहिणी पद का बड़ा सुन्दर विवेचन किया गया है। प्राचीन सामाजिक जीवन में गृहिणी पद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। आन्तरिक जीवन का उत्तरदायित्व गृहिणी के ऊपर होता था, जबकि बाह्य जीवन की जिम्मेदारी पति के ऊपर थी। भारतीय

संस्कृति में पारिवारिक जीवन में गृहिणी का पद सर्वोपरि था। तभी तो शकुन्तला को पतिगृह जाते समय महर्षि कण्व उसे नारी धर्म का उपदेश देते हुए कहते हैं- **'पुत्रि ! पतिगृह में गुरुजनों की सेवा करना। पति यदि कभी तुम से रुष्ट हो जाए तो तुम उन्हें कुछ न कहना। इस प्रकार का आचरण करने वाली स्त्री अनायास गृहिणी पद को प्राप्त कर लेती है।'** गृहिणी के दायित्व निर्वहन के साथ-साथ उसे पत्नी के रूप में गार्हस्थ दिनचर्या का भी निर्वाह करना पड़ता था। महर्षि वाल्मीकि ने जगज्जननी सीता को भारतीय समाज में एक पत्नी के रूप में उपस्थित किया है, जिनका चरित्र भारतीय प्रमदाओं के लिए अनुकरणीय है।

माता :-

गृहिणी पद के अतिरिक्त निसर्ग ने स्त्री को मातृपद के योग्य भी बनाया है। माता शब्द पारिवारिक जीवन के लिए अमृत का भण्डार है। माता परिवार के लिए त्याग, तप एवं प्रेम की त्रिवेणी है, जिसे इस त्रिवेणी के पवित्र जल में स्नान करने का सौभाग्य न मिला हो उससे अधिक अभागा और दूसरा न होगा। माता और पुत्र का जो परस्पर प्रेम रहता है उसी से पारिवारिक जीवन अधिक सुखी बनता है। नारी का माता रूप भारतीय संस्कृति में ऊँचे से ऊँचे आदर्शों की साक्षात् मूर्ति ही है। वह अपने लिए जीवित नहीं रहती बल्कि अपने परिवार के लिए, अपने पुत्रों के लिए। इस प्रकार मातृत्व का पद उसे पारिवारिक जीवन का केन्द्र बनाता है। प्राचीन भारत में स्त्री के पद को भी अच्छी तरह से समझा गया था और इसका महत्त्व और विवेचन सूत्र, स्मृति आदि साहित्य में किया गया है।

सहचरी :-

भारतीय संस्कृति में उपरोक्त पदों के अतिरिक्त नारी को एक पद और प्राप्त था वह था पुरुष की सहचरी। गृहिणी, माता एवं परिवार के दायित्वों का दिन-रात निर्वहन करने से उसके पति का जीवन नीरस न हो जाए, इसलिए वह पति की सहचरी बनकर जीवन सौरव्य का आनन्द लेती थी। प्रकृति ने उसे जो सौन्दर्य एवं माधुर्य दिया है उसे अपने प्रयत्नों से ललित कला आदि के रूप में परिणत करके जीवन के दुःखों को भुलाने में समर्थ होती थी। उसका सौन्दर्य एवं माधुर्य पूर्ण प्रेम जो उसके अंग-प्रत्यंगों से टपकता था पति की दिनभर की चिन्ताओं को भस्मसात् करने में समर्थ होता था। पुरुष ऐसी सहचरी को प्राप्त कर अपना दुःख आधा और सुख दुगना कर लेता था। भारतीय नारी तो त्याग की आधारशिला है। नारी के बिना पुरुष का जीवन अधूरा है। वह दिव्य गुणों की प्रतिमा है, अलौकिक गुणों की मूर्ति है। उसके प्रेम की अभिव्यञ्जना तो भवभूति के उत्तर रामचरितम् में अद्वितीय है-**'यह प्रेम सुख- दुःख में एकाकार रहता है। समग्र अवस्थाओं में अनुकूल रहता है। इससे हृदय को विश्राम मिलता है। बुढ़ापे तक प्रीति नहीं घटती। नारी का यह कल्याणकारी भद्र प्रेम है। किसी-किसी भाग्यशाली पुरुष को यह प्राप्त होता है।'** उक्त कथन सीता के वियोग में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का है। आपस्तम्ब एवं महाभारत आदि पर्व इत्यादि ग्रन्थों में स्त्री के सहचरी पद का अच्छा विवेचन किया गया है।

प्राचीन भारत में नारी की बहुत अच्छी स्थिति थी। उसे आदर्श गृहिणी, माता एवं सहचरी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। इसी कारण मनु ने स्पष्ट उल्लेख किया है- **'बहुत कल्याण चाहने वाले पिता, भ्राता, पति तथा देवर इन स्त्रियों का आदर करें। जहाँ ये दुःखी नहीं रहती हैं वहाँ कुल वृद्धि को प्राप्त होता है और जिन घरों में ये दुःखी रहती**

हैं वे पूर्णतया विनाश को प्राप्त होते हैं।' स्त्री की अनुपस्थिति में पुरुष कोई भी धार्मिक कार्य करने का अधिकारी नहीं होता था। इन्दुमती के स्वर्गारोहण के पश्चात् राजा अज का विलाप नारी की विशेष महत्ता का द्योतक है- **'गृहिणी, सचिव, सखी और ललित कला सीखने में तू मेरी प्रिय शिष्या थी, निर्दय भाग्य ने तुझे मुझसे छीनकर क्या नहीं छीना?'**

इस प्रकार स्त्री का कार्यक्षेत्र परिवार तक सीमित नहीं था, पुरुष के समान उसका भी वैयक्तिक जीवन व सामाजिक जीवन रहता था। संस्कारों द्वारा उसे भी सुसंस्कृत करने का अधिकार था। स्त्री शिक्षा का भी यथोचित प्रबन्ध था, उनके भी गुरुकुल रहते थे। मनु ने स्पष्ट लिखा है- स्त्रियाँ जीविका निर्वाह हेतु अध्यापन कार्य करती थीं। पाणिनि ने भी उपाध्याया पद का संकेत किया। है। अथर्ववेद के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त करने के बाद कन्या युवा पति को प्राप्त होती है। इस प्रकार वेदाभ्यास कन्याओं के लिए भी अनिवार्य था। बाल-विवाह, वृद्ध विवाह अज्ञात थे। विश्ववारा, आत्रेयी, अयाला, आत्रेयी, घोषा काक्षीवती, सिकता, निवावरी, यमी, वैवस्वती आदि स्त्रियों के वेदमन्त्र ऋग्वेद में विद्यमान हैं। दर्शन-शास्त्र के इतिहास में गार्गी, मैत्रेयी का नाम आज भी अमर है। पति प्रेम व पति निष्ठा में प्राचीन स्त्रियों ने कम प्रशंसा प्राप्त नहीं की। कैकेयी ने अपना गौरव प्रदर्शित किया। सीता जंगल में राम के साथ भटकी। पति प्रेम में सावित्री की कथा अजर-अमर है। भारतीय संस्कृति को गौरवशाली बनाने में स्त्रियों का अमूल्य योगदान है।

वर्तमान युग में नारी की स्थिति पर विशेष सुधार हुआ है। आज की नारी ने शिक्षा, विज्ञान, शासकीय सेवा एवं संसदीय क्षेत्र तक में स्थान प्राप्त कर लिया है। इतना सब कुछ होते हुए भी मेरा यह मानना है कि वर्तमान समय में नारी की स्थिति पर पूर्ण सुधार नहीं हुआ है। आज भी समाज में नारियों का व्यवसायी-करण हो रहा है। दहेज प्रथा नारी सम्मान में घातक बनकर उसको निगल जाने के लिए सुरसा की भाँति मुँह फैलाए हुए है। सौन्दर्य प्रतियोगिता, सेल्स गर्ल, फैशन शो, अश्लील प्रदर्शन आदि युवा पीढ़ी को भोगवाद की ओर अग्रसर कर रहे हैं। काशी की विधवाओं, दक्षिण के मन्दिरों की देवदासियों एवं विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों की भिक्षुणियों के साथ क्या हो रहा है? यह सर्वविदित है। महिला सशक्तिकरण का बड़ा प्रचार-प्रसार हो रहा है। यह सशक्तिकरण उन नारियों तक अंशमात्र में लागू हो सकता है जो नौकरी के माध्यम से धनार्जन कर रही हैं। गाँवों में जाकर कोई देखे की घोर बरसात, भीषण ठण्ड एवं वैशाख की गर्म दोपहरियों में खेतों में काम करती हुई महिला का क्या नारी सशक्तिकरण हुआ है? आज भी घर-घर में नारियों के गर्भाशय में गाज गिर रही है, जबकि द्वापर में एक उत्तरा के गर्भ पर गाज गिरी थी। इन बातों का निदान प्राचीन भारतीय संस्कृति में खोजा जा सकता है, जहाँ स्त्री की बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। नारी तो शक्ति की मूर्ति है, प्रेमावतार है, अनुराग की वाटिका है। वास्तव में उसे इसी रूप में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है तभी भारतीय समाज में नारी जगत में पूर्ण सुख-शान्ति की स्थापना हो सकेगी।

नारी एक शक्ति है, जिसे आत्मसात करने से पुरुष की रिक्तता, थकान और निरुद्देश्यता समाप्त हो जाती है। लेकिन यह भावना एक साधन है। पत्नी कभी साध्य नहीं हो सकती, लेकिन साधन के समान साध्य से अधिक प्रियकर हो सकती है।

- महावीर अधिकारी

पाबू पैंतीसी

– मदनसिंह सोलंकिया तला

प्रण-पाळण राखण रसा, समरसता संदेश।
अवनी पर पाबू अवल, विरलौ वीर विसेस।।

रंग भीनी रातां तजी, पाली पातां प्रीत।
जुग जातां बाता रही, गातां गौरव गीत।।

आबू जिम ऊंचौ अनड़, पाबू प्रण रै पांण।
काबू न आयो किणरै, भालालौ! कुळ भांण।।

देवल अणदै दीकरी, बांधी वचनां डोर।
पाबू कीधी पाळणा, तिण सूं वधियौ तोर।।

देवल नै पूछे कमध, दूधी हन्दौ दाम।
अबखी आडौ आवजै, कमधज धेनां काम।।

देवल दूधी देवतां, कीधौ पाबू कौल।
केसर तो लीधी कमध, माथै साटै मोल।।

अनमी गढ अमरांण रौ, सोढौ सूरज मल्ल।
जिणरै फूलम धीवडी, गाइजै गीतां गल्ल।।

परणंतां धण पेखियौ, प्रणधारी प्रत-पाळ।
सोढी मन में सोचियौ, वीर धीर वाडाळ।।

मुगट-मणि मरू देस रौ, मानवता रौ मौड़।
प्रण-धारी प्रण पाळतां छोड दियौ गठजोड़।।

आधै फेरां ऊठ नै, चंवरी काट्यौ चीर।
वचन निभावण वाहरू, वळै न पाछौ वीर।।

रोक्यां जद रुकियौ नहीं, वचनां बंधियौ वीर।
धाट धरा री धीवड़ी, अंतस हुयी अधीर।।

सोढी बोली सायबा चाल्या किणविध छोड़।
पांगरती इण प्रीत रा, तंतू कांकण तोड़।।

परणेतण! थां प्रीतड़ी, हिवड़ै घणी हिलोर।
(पण) वचन डोर बांधी वळै तूटै प्रीत'ज डोर।।

सिसकण लागी सेज जद, भावां भीगी रात।
करतब पथ रै कारण, प्रीतम सुणी न वात।।

चंवरी में कंवरी रही, चढियौ भंवरी पूठ।
हथळेवै री मैंदड़ी, मंडी तेग री मूठ।।

सजती सेज सुहाग री हेत-प्रीत रा गीत।
तैं पाळी धांधल तणा. पण वचनां सूं प्रीत।।

कळपी देवल कांगरै, पाबू सुणी पुकार।
अधपरणी तज आंगणै, जावै रण जोधार।।

चंवरी बैठो चाव सूं, माथै बंधियौ मौड़।
आधै फेरां ऊठियौ, रुकियौ नह राठौड़।।

आधै फेरां आंगणे, ऊठ गयौ उण-ताळ।
वचनां बंधियों वीर-वर, पूगौ रण प्रण-पाळ।।

कमधज नै नौरा करें, धर काळजियै धीर।
बापो! बापो! बोलतां चढियौ केसर वीर।।

भारथ भाला रोपिया, कांकण-डोरां सज्ज।
बणियौ गायां वाहरू, केसरियौ कमधज्ज।।

भळकै भालौ हाथ में, खळकै रण-खालाह।
पळकै पचरंग पागडी, वीरां वर मालाह।।

भुरजालौ पाबू भमै, जमै समर जोधार।
रमै रास रण- आंगणै, नमै क्रोड नर-नार।।

प्रणधारी! पाबू तणौ, नव-खंडां जस-नाम।
तेरै सौ तेईस में, कमधज आयो काम।।

पाबू सुणी पुकार जद, जायल गायां जाय।
आधा फेरा अवन पर आधा सुरपुर खाय।।

प्रण-पाळक पाबू जिसौ, हूवौ न कोई होय।
समवड़ इण संसार में कर नह पायौ कोय।।

बरस आठ सौ बीतिया, बीती नह जस बात।
पाबू वात न वीसरै, जद लग मानव जात।।

सौ सौ बरसां जीवतां, करै न कीरत काम।
पाबू मगर पचीस में, कीधौ नव-खंड नाम।।

पाबू री पड़ पेखतां, अंतस में अनुराग।
भोपा वाचै भाव सूं, रावण हत्थां राग।।

कै रूणीचे रामदै, कै पाबू राठौड़।
समरसता रा सारथी, सूरां रा सिरमौड़।।

धांधल सुत री धारणा, धरणी कोलू धाम।
वांरा लेवूं वारणा, पणधारी परणाम।।

परवाडा पाबू तणा, गावै माटां गीत।
भोपा वीरत भाव सूं. रुडी निभावै रीत।।

पूजीजै सारी प्रथी, पाबू प्रण परियांण।
वातां कदै न वीसरै, पातां दै परमांण।।

होया कईयक होवसी, मूंछाळा मरुदेस।
पुहमी पर पाबू तणौ, रहसी नाँव विसेस।।

दिस-दिस थारा देवरा, दिस-दिस थारौ नाम।
दिस-दिस गौरव-गीतड़ा, दिस-दिस कीरत-काम।।

पूजीजै भड़ पूतळै, बांचीजै पड़ रात।
गाईजै इम गौरवै, पुहुमी पाबू प्रात।।

पृष्ठ 19 का शेष

बांदनवाड़ा का अन्तिम मेवाड़-मुगल संघर्ष

लवाजमा साजो सामान भी छीन लिया जिसमें चांदनी डेरे (निवास हेतु चांदनी रंग की टेंट), नगाड़ा, निसान या निशान, सुथरी अर्थात् रस्सी या सूतली, हाथी का निशान और हाथी रो नोपती अर्थात् गज के ऊपर रखी गई नौबत नामक वाद्ययंत्र को बजाने वाला, चँवर, सुखपाल अर्थात् पालकी, जुजुरबा उठा रा अर्थात् ऊँटों के गहने, चड़ी अर्थात् हाथी के पैर पर बंधने वाला गहना, गोरा आरव या आरब अर्थात् हाथी के चेहरे पर कपड़े का या धातु का आवरण एवं गज के मुखमंडल व पीछे पूंछ पर बंधने वाले गहने इत्यादि प्रमुख थे। ये लवाजमा अभी तक कानोड़ गढ़ में सुरक्षित है।

चित्तौड़-उदयपुर का पाटनामा में बाठेड़ा महारावत महासिंह के साथ युद्ध में शहीद हुए कानावत सिसोदिया सरदारों का उल्लेख मिलता है। रावत महासिंह सारंगदेवोत की बांदनवाड़ा युद्ध में प्रदर्शित वीरता व बलिदान पर निम्नलिखित गीत (अज्ञात रचयिता) लिखा गया-

धूबे रोद सीसोद घर वेद मच धमाधम, पीड़ न खमे कर जतन पाटै।

माहवा सुवर कज अछर वर आंटे मले, मले रूद्र अग्यारह कमल माटे......

माहव जस प्रकाश ग्रन्थ (हस्तलिखित)

निष्कर्ष- मेवाड़ राज्य का मध्यकालीन इतिहास में दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य के धर्मांध एवं साम्राज्यवादी शासकों से निरंतर संघर्ष बना रहा। इसी क्रम में अपने पूर्वज गुहिलोत शासकों की परम्परा का अनुकरण करते हुए मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय (1711-1734 ई.) के शासनकाल में भी मेवाड़ का मुगल शासक से अजमेर के मार्ग पर स्थित बांदनवाड़ा स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें मेवाड़ विजयी रहा और मुगल सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। इस युद्ध में हुए मेवाड़ी योद्धाओं के त्याग और बलिदान पर मेवाड़ के ऐतिहासिक प्राथमिक स्रोतों द्वारा प्रकाश डाला गया है। मेवाड़ राज्य के उत्तरी सीमान्त पर स्थित बांदनवाड़ा कस्बे (वर्तमान अज़मेर में) में हुए इस युद्ध में मेवाड़ के अनेक योद्धाओं ने अपना पराक्रम दिखाया। युद्ध में मेवाड़ के महाराणा लाखा के द्वितीय पुत्र अज्जा के पुत्र सारंगदेव के वंशज रावत महासिंह सारंगदेवोत लड़ते काम आते हैं और आपका बलिदान उत्तर मध्यकालीन इतिहास में उल्लेखनीय रहा। इस युद्ध के बाद मुगलों के पतन में भी तीव्रता दृष्टव्य होती हैं। ●

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

समाज सेवा व विद्वानों से सम्पर्क

हिन्दू संस्कृति के हिमायती नेताओं और धर्माचार्यों से राव गोपालसिंह का घनिष्ठ सम्बन्ध बना रहता था। महामना पं. मदनमोहन मालवीय, भाई परमानन्द, वीर सावरकर और डॉ. मुंजे से उनका पत्र-व्यवहार होता रहता था। ''वीर विनोद-कर्ण पर्व'' के सृजेता स्वामी गणेशपुरी खरवा आते और कई दिनों तक यहीं रहते थे। स्वामीजी ने अपनी रचना कर्णपर्व को बारहठ समरथदान के राजस्थान यंत्रालय अजमेर से प्रकाशित कराने हेतु राव गोपालसिंह से अनुरोध किया था। उन्होंने तत्परता से कर्णपर्व छपवा कर स्वामीजी के आदेश का पालन किया था। भारत धर्म महामंडल के अधिष्ठाता स्वामी ज्ञानानन्द, राव गोपालसिंह को क्षात्र-धर्म के विद्यमान प्रतीक कहकर सराहते और आदर देते थे। इतिहास के सामयिक मान्य विद्वान पं. गौरीशंकर ओझा, दीवान बहादुर हरविलास शारदा, मुंशी देवी प्रस्ताद जोधपुर, पं. विश्वेश्वर नाथ रेऊ जोधपुर उनके घनिष्ठ मित्रों में थे।

एक लम्बे अन्तराल के पश्चात कारावास से मुक्त होने पर बारहठ ठा. केसरीसिंह कोटा का पुनः खरवा आना शुरू हुआ। अपने जीवन के उस संध्याकाल में उन दिनों कर्मठ मित्रों ने एक बार पुनः खरवा के उस निर्जन जंगल के खुले आकाश के नीचे बैठकर जहाँ पर कभी उन्होंने क्रान्ति की योजनाएँ बनाई थी, अपने बीते दिनों की घटनाओं पर चर्चा की और आने वाले परिवर्तनकारी युग में अपनी वृद्धावस्था जन्म अशक्तता और बुझती जीवन ज्योति पर दृष्टिपात किया था। परन्तु ''धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे'' के भगवद् वाक्य पर उन दोनों की अटूट आस्था थी। उन्हें दृढ-विश्वास था कि मृत्यु के पश्चात वे पुनः इस धर्म प्रधान भारत भूमि पर जन्म लेंगे और अपने अधूरे कार्य को पूरा करेंगे। राजस्थान के राजाओं का पतन उन्हें नजदीक दिखाई देने लगा था। भारत धर्म विभाजन, साम्प्रदायिक रक्तपात और राज्यतन्त्र के अन्त का उन्हें पूर्वाभास हो चुका था। तभी तो ठा. केसरीसिंह बारहठ ने राजाओं को चेतावनी देते हुए कहा था–

अवधी अब ओछीह, सोचीज्ये सह भूपत्याँ।
पड़गी पग पोचीह, नीति संलोची नेह रखी।।

हे भूमीपति राजाओ! जरा सोचो!! आपके शासनकाल की अवधि अब समाप्त होने वाली है। आपका पक्ष निर्बल पड़ चुका है। आप प्रजारंजन की लोकप्रिय नीति पर नहीं चल सके।

जीवन के अन्तिम काल में अध्यात्म और भक्ति में पले राव गोपालसिंह ने सन् 1938ई. में ध्यानावस्था में दृष्टि पटल पर उतरते दृश्यों को लाल पैन्सिल से लिखकर लिफाफे में बन्द करके अपने कलमदान में रख दिया। उनकी मृत्युपरान्त सन् 1939ई. में लिफाफे को खोलकर पढ़ा गया तो लिखा पाया ''आज ध्यान में भारत के टुकड़े होते दिखलाई दिए।'' ''आज के ध्यान में पंजाब में खून की नदी बहती देखी।'' ''आज कोई छोटा द्वीप समुद्र में डूबता नजर आया?''

सती शूरमाओं की जन्मदात्री राजस्थान की इस वीर भूमि पर न आज राव गोपालसिंह मौजूद हैं और न बारहठ केशरीसिंह। परन्तु उन भविष्य द्रष्टाओं की वे भविष्यवाणियाँ और ध्यानावस्था में स्फुरित वे दृश्य सच्चे और साकार होकर सामने आ गए हैं। काश-हम उन्हें देखें और समझें।

सन् 1936ई. में मणिभवन कोटा से डाक से प्रेषित एक पत्र में डॉ. केशरीसिंह ने जिन गौरव महिमा मण्डित शब्दों में रावगोपाल सिंह को स्मरण किया था, वे शब्द वास्तव में स्वर्णाक्षरों में अंकित किए जाने योग्य हैं। पत्र को प्रारम्भ करते हुए उन्होंने यह दोहा लिखा था -

रह्यो लाल पांचाल में, महाराष्ट्र में बाल।
राजत राजस्थान में, गौरवमय गोपाल।।

(दि. 7.4.36)

जिस प्रकार पंजाब को लाल (लाला लाजपतराय) पर और महाराष्ट्र को बाल (बाल गंगाधर तिलक) पर गर्व है, उसी भाँति राजस्थान को गोपाल (गोपालसिंह खरवा) पर गर्व है।

राजस्थान को अपनी बपौती मानने वाले और अपने को प्रगतिशील कहकर अतीत में अर्जित गौरव और संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले, आज के जन-नेता उन महापुरुषों के प्रति कृतघ्न न बनते, उनके बलिदानों को समझने का प्रत्यन करते तो कितना अच्छा होता। उन्हें भी गर्व से बोलने का मौका मिलता।

कवियों और साहित्यकारों की दृष्टि में राव गोपालसिंह- राजस्थान और संयुक्त प्रान्त के अनेक विद्वान, कवि और साहित्यकार राव गोपालसिंह से मिलने आते और सम्मानित होकर जाते थे। मेवाड़, मारवाड़ और ढूँढ़ाड़ के शीर्षस्थ चारण विद्वानों की दृष्टि में राव साहब का स्थान बहुत ऊँचा था। वे उन्हें क्षात्रत्व की प्रतिमूर्ति मानते और उनमें सच्ची राजपूती के दर्शन करते थे। डॉ. केशरी सिंह बारहठ के लघु भ्राता किशोर सिंह बार्हस्पत्य को राव गोपालसिंह ने पटियाला दरबार को कहकर वहाँ के इतिहास विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त कराया था। वे प्रतिवर्ष एक बार राव गोपालसिंह से मिलने खरवा अवश्य आते थे। जयपुर राज्य के सेवापुरा ग्राम के निवासी महाकवि हिंगलाजदान कविया राव गोपालसिंह के अंग्रेज विरोधी कार्यों के प्रशंसक थे। सिरोही के महाराव द्वारा सम्मानित पांचोटिया (मारवाड़) के शंकरदान आढ़ा जो उच्च कोटि के कवि और विद्वान थे, अनेक बार खरवा आये और राव साहब ने यथायोग्य उनका स्वागत-सत्कार किया। स्योनाणा (मेवाड़) के केशरीसिंह बारहठ, बांधनवाड़ा (मेवाड़) के नाथूसिंह महियारिया, बासणी (मारवाड़) के हेमदान कविया, चारणवास के भैंरुदान दधवाडिया, आमेट (मेवाड़) के राव गिरवरजी, किशनगढ़ के राव घनश्याम, पंडित उमाशंकर द्विवेदी उदयपुर (मेवाड़), संयुक्त प्रान्त के पं. विश्वेश्वरनाथ बाजपेई, पुष्कर के भट्ट विष्णुबद्री शर्मा आदि कवि कोविद राव गोपालसिंह से मिलने खरवा, पुष्कर अथवा जहाँ भी उनका कैम्प होता, आते और कई दिनों तक उनके सान्निध्य में रहकर अपने को सम्मानित तथा आनन्दित महसूस करते थे। उपर्युक्त कवि और विद्वानों ने शव गोपालसिंह के महान कार्यों की प्रशंसा में अनेक रचनाएँ सर्जित की थी।

महाराजा पटियाला और जाम साहब जामनगर

पंजाब के पटियाला राज्य के सिख राजा प्राचीनकाल में पंजाब के लक्खी जंगल क्षेत्र से मुल्तान के विस्तृत प्रदेश पर राज्य करने वाल भाटी राजपूतों के वंशधर थे। जैसलमेर के भाटी और पटियाला के शासक सिक्ख राजा एक ही कुल की दो शाखाओं के प्रतिनिधि थे। अपनी दानशीलता के लिए गीतों में गाया जाने वाला भाटी सरदार हेमड़हाऊ जिसने पुनाण नदी के किनारे की झाड़ियों में काँटे-काँटे में मोती पिरोकर याचकों को लूट ले जाने की खुली छूट दे रखी थी- पटियाला राजवंश का पूर्व पुरुष था। पटियाला के स्वर्गीय महाराजा भूपेन्द्रसिंह की हार्दिक आकांक्षा थी कि अपने सजातीय राजपूत कुलों के साथ वे खान-पान और वैवाहिक सम्बन्धों में आबद्ध बने रहें। राव गोपालसिंह खरवा बहुत पहले से ही प्रान्तीयता का

(शेष पृष्ठ 31 पर)

गतांक से आगे

काठेवाड़ी–महाराष्ट्र आदर्श गाँव (आर्ट ऑफ लीविंग)

– कर्नल हिम्मतसिंह

महाराष्ट्र राज्य के नांदेड जिले में स्थित 'काठेवाडी' एक छोटा-सा गाँव है। दस वर्ष पूर्व इस गाँव के सत्तर फीसदी लोग नशेडी थे जो जमकर शराब का सेवन और धूम्रपान करते थे। लेकिन दिसम्बर 2008 से आर्ट ऑफ लिविंग संस्था ने इस गाँव को गोद ले लिया। इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने पूर्ण लगन के साथ अथक प्रयास किया और इस पिछड़े हुए गाँव की कायापलट कर दी। आर्ट ऑफ लिविंग के स्वयं सेवकों ने सर्वप्रथम ग्रामवासियों का विश्वास जीता और नव चेतना शिविर का आयोजन कर जन चेतना जागृत करने का प्रयास किया। संस्था ने स्वच्छता, स्वास्थ्य, घर परिवार, जीवन मूल्यों और भाईचारे के आदर्शों के बारे में लोगों को शिक्षित कर उनमें बदलाव लाने का प्रयास किया। गाँव में सबसे पहले नशा मुक्ति अभियान चलाया गया जिसमें उन्हें आशातीत सफलता मिली। आज हालात यह है कि काठेवाडी गाँव पूर्ण रूप से शराब सेवन और धूम्रपान से मुक्त है।

गाँव के नशा मुक्त होने पर राज्य सरकार ने 'टण्टा मुक्त गाँव' अभियान के तहत गाँव को पुरस्कृत किया।

नेक नियती और आपसी विश्वास की ऐसी सुदृढ नींव स्थापित की गई कि दुकान (जय गुरुदेव वस्तु भण्डार) पर बगैर दुकानदार के बिक्री होती है और खरीदे गए सामान के मूल्य का भुगतान भी रोकड़ पेटी में रकम डालकर कर दिया जाता है। आज तक किसी प्रकार की हेराफेरी की शिकयत नहीं आई। जरूरत के सामान से लैस सजी धजी स्वच्छ दुकान रेट लिस्ट के साथ सदैव उपलब्ध रहती है। इसका संचालन स्वयं सहायता समूह करता है। इसी दुकान में एक दान – पात्र भी रखा गया है जिसमें स्वेच्छा से दी गई दान राशि एकत्र की जाती है। इस राशि का इस्तेमाल विकास कार्यों और जनहित योजनाओं पर किया जाता है।

पूर्व में किसी भी घर में शौचालय नहीं था। आर्ट ऑफ लिविंग के अभियान के तहत 110 शौचालयों का निर्माण कराया गया है।

अब हर घर में शौचालय है। काठेवाडी गाँव को निर्मल गाँव योजना के अन्तर्गत भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। केन्द्र सरकार की ओर से गाँव में विकास के लिए आर्थिक अनुदान भी दिया जा रहा है।

गाँव में पक्की सड़के हैं और साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। गाँव के सभी विकास कार्य जन भागीदारी से सम्पन्न होते हैं और बाहरी मदद को मात्र बोनस माना जाता है।

सभी समस्याओं के समाधान और कार्यों के निष्पादन के लिए स्वयं सहायता समूह बनाये गये हैं। विकास कार्य की योजना, अर्थ उपार्जन और योजना का निष्पादन इन्हीं की जिम्मेदारी है। साथ ही आपसी सामंजस्य बनाये रखना भी इन्हीं समूहों की जवाबदेही है।

आर्ट ऑफ लिविंग के प्रयासों से ग्रामीणों में अद्भुत नागरिक भावना जागृत हुई है। वे नम्र स्वभाव के साथ ही शिष्टाचार से ओत प्रोत हैं और सह अस्तित्व की भावना से एक विशाल परिवार के रूप में रहते हैं। एक दूसरे की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। सभी घर गुलाबी रंग से पुते हैं।

आर्ट ऑफ लिविंग संस्था ने इसे ग्रामीण जीवन के आदर्श के रूप में परिवर्तित कर दिया है। आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर की सिखलाई को ग्रामवासियों ने बड़े सुन्दर ढंग से अपने घरों की दिवारों पर उकेर रखा है। पूज्य गुरुजी की शिक्षा को सभी आत्मसात किये प्रतीत होते हैं। सभी ग्रामवासी शाम के समय सत्संग में भाग लेते हैं।

काठेवाडी गाँव के प्रत्येक घर से एक सदस्य ने आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर कर रखा है।

इस गाँव में एक मुस्लिम परिवार भी वर्षों से रहता आया है। इस परिवार के मुखिया अल्लाउद्दीन शेख का मानना है कि मेरा परिवार पीढ़ियों से यहाँ रहता आया है। मेरे 80 वर्ष के जीवन में मैंने ऐसा चमत्कार पहले कभी नहीं देखा। हमारे सभी के बीच में बिना भेद भाव के मधुर संबंध है और भाईचारे के साथ जीवन की खुशहाली का आनन्द लेते हैं। मेरे पुत्र ने भी आर्ट ऑफ लिविंग का कोर्स कर रखा है।

नशा मुक्ति, स्वच्छता, मधुर सम्बन्ध, आपसी विश्वास, नेकनीयती, जीवन मूल्यों के प्रति विकास की ललक और सहअस्तित्व की भावना के साथ काठेवाड़ी ग्राम सही मायने में आदर्श ग्रामीण जीवन का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सड़क, शौचालय, स्वच्छता और बिजली-पानी जैसी भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना तो सरल है परन्तु मनुष्य की सोच और व्यवहार को परिवर्तित करना बहुत कठिन कार्य है जिसको यहाँ आर्ट ऑफ लिविंग के स्वयं सेवकों ने प्रत्यक्ष रूप से कर दिखाया। वे सभी और उनकी संस्था साधुवाद के पात्र हैं।

आज यह गाँव पूरे राष्ट्र के समक्ष एक मिसाल है और यहाँ के निवासी रामराज्य की अनुभूति करते हैं।

काठेवाड़ी की तरह ही आर्ट ऑफ लिविंग ने सतारा जिले के कापसी गाँव की भी काया पलट कर दी है और अनेक गाँवों में उनका अभियान जारी है।

पुंसरी गुजरात

आदर्श गाँवों की चर्चा हो और उसमें पुंसरी-गुजरात का जिक्र नहीं हो ऐसा सम्भव नहीं है। पुंसरी गाँव गुजरात राज्य के साबरकांठा जिले में स्थित है। यह वही गाँव है जिसका उदाहरण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सांसद आदर्श ग्राम योजना के उद्घाटन के शुभावसर पर दिया था। आदर्श गाँव के रूप में आज पुंसरी गाँव को देश विदेश में खूब पहचाना जाता है।

वर्ष 2006 से पूर्व पुंसरी भी आम गाँवों जैसा ही था। परन्तु 2006 में हिमांशु पटेल को इस गाँव का सरपंच चुना गया। इस 23 वर्ष के नव युवक ने अपनी नई सोच और कुछ कर गुजरने के इरादे से विकास का बीड़ा उठाया और जल्दी ही इस गाँव की तस्वीर और ग्रामवासियों की तकदीर बदल दी। आज जहाँ देश के कई गाँव और शहर पानी, बिजली एवं सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं वहीं गुजरात का पुंसरी गाँव सभी सुविधाओं के कारण लाखों गाँवों के लिए आदर्श बन गया है।

हिमांशु पटेल ने पद संभालते ही सबसे पहले सेनीटेशन सुविधा पर जोर दिया। स्वच्छता के लिए नियम बनाये और सख्ती से उनका पालन करवाया। नियम तोड़ने वालों को जुर्माना भरना पड़ता है।

सुरक्षा और मॉनिटरिंग के लिए गाँव में CCTV कैमरे लगाए। बिजली के खंभों पर नंबर डाल दिए ताकि जहाँ भी तकनीकी खराबी हो शिकायत में नंबर लिखने से समस्या का समाधान शीघ्र हो सके।

पूरे गाँव में Wi-Fi कनेक्टीविटी है। इण्टरनेट की कनेक्टीविटी हर वक्त और हर जगह सुचारू रूप से उपलब्ध रहे इसके लिए चार ट्रान्समीटर टावर्स लगे हैं। इण्टरनेट की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है।

आपसी सम्पर्क बनाये रखने के लिए और सूचना के आदान प्रदान करने हेतु गाँव में पब्लिक एड्रेस सिस्टम स्थापित करवा रखे हैं। इनके जरिये जरूरी सूचना तुरन्त प्रसारित की जा सकती है। सुबह शाम इस सुविधा का उपयोग भजन कीर्तन के लिए भी किया जाता है।

पुंसरी में गाँव का RO वॉटर प्यूरिफिकेशन प्लांट है जिसकी देख रेख और संचालन गाँव के ही शिक्षित लोग करते हैं। गाँव वालों के लिए स्वच्छ और निर्मल पानी का 20 लीटर का कैम्पर मात्र चार रुपये में उपलब्ध कराया जाता है।

छः हजार की आबादी वाले गाँव में 22 लाख की लागत से 450 एलईडी (सोलर स्ट्रीट लाईट) लगाई जा चुकी है।

पंचायत ईको फ्रेण्डली इलेक्ट्रिसिटी प्लांट लगा रही है इसके लिए राज्य सरकार ने 40 लाख रुपये का अनुदान पारित किया है।

गाँव में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की शाखा कार्यरत है जिसमें गाँव के करीब पाँच हजार खाते हैं ।

स्कूल जाने वाले बच्चों और दूध बेचने वाले पशुपालकों के लिए पंचायत की बस सेवा भी है।

कचरा इकट्ठा करने के लिए ई-रिक्शा का इस्तेमाल होता है और इस कचरे से बिजली बनाई जाती है।

शिक्षा के लिए गाँव के स्कूल में सभी मॉडर्न सुविधाएँ मुहैया कराई गई हैं। क्लास रूम एयर कंडीशन होने के साथ ही कम्प्यूटर्स, प्रोजेक्टर्स और ऑडियो वीडियो एड्स से लैस है। वर्ष 2003 में जहाँ 300 विद्यार्थी थे अब करीब 700 विद्यार्थी हैं। स्कूल ड्राप आउट का एक भी प्रकरण नहीं है।

विकास कार्यों के वित्त प्रबंधन के लिए जिला प्रशासन के साथ मिलकर अलग-अलग योजनाओं के तहत दिये जाने वाले अनुदान का सहारा लिया गया है। जिसमें जिला प्लानिंग कमीशन, बैकवर्ड रीजनल ग्राण्ट फण्ड, 12वाँ फाइनेन्स कमीशन और स्वयं सहायता समूह की योजनाओं को दिये जाने वाले आर्थिक अनुदान से विकास कार्य प्रारम्भ किये गये हैं।

केन्द्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं से प्रत्येक ग्राम पंचायत को तीन से पाँच करोड रुपये मिलते हैं लेकिन कुछ ही गाँव उस रकम का सद्उपयोग कर पाते हैं। पुंसरी में सरपंच हिमांशु पटेल ने आर्थिक प्रबंधन की भी एक अनुकरणीय मिसाल प्रस्तुत की है।

पुंसरी डिजिटल आदर्श ग्राम है। इस गाँव को 2010 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने श्रेष्ठ गाँव माना था।

हिमांशु पटेल अपने गाँव के विकास के लिए अनेक देशों का भ्रमण और 37 देशों के लोगों के साथ विचार विमर्श कर चुके है। इन्होंने BRICS कांफ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। 'गाँव का विकास' विषय पर 90 से अधिक कॉलेजों में लेक्चर और रोहतक में आयोजित IIM TED X में भी हिमांशु पटेल विकास मॉडल पर IIM के विद्यार्थियों को लेक्चर दे चुके हैं। अन्य देशों के गाँव के विकास एक्सपर्ट कमेटी में भी सरपंच के रूप में इनके नाम का समावेश किया गया है।

श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा घोषित किये गये आदर्श ग्राम योजना में भी पुंसरी की डाक्यूमेण्ट्री के माध्यम से कहानी बताई गई थी।

पुंसरी में देशभर से आला अधिकारियों, सामाजिक संगठनों एवं ग्रामीण विकास में रुचि रखने वाले लोगों और संस्थाओं का आवागमन बढ़ रहा है।

रालेगाँव सिद्धि-महाराष्ट्र
वर्षा जल संरक्षण एंव संचय का नमूना

रालेगाँव सिद्धि महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले की पारनेर तहसील में स्थित एक विश्व विख्यात गाँव है।

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से इसे एक आदर्श गाँव होने का सम्मान प्राप्त है। यह ग्राम गणतंत्र का एक स्थायी निर्देशन है।

रैन शैडो क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाला यह गाँव सामाजिक कार्यकर्ता श्री अन्ना हजारे की जन्म भूमि होने के साथ ही कर्म भूमि भी है।

सेवानिवृति के उपरान्त 1975 में जब अन्ना हजारे अपने गाँव में लौटे तब गाँव की स्थिति बड़ी दयनीय थी। सूखे, गरीबी और शराब के अवैध धंधे में लिप्त ग्रामवासी गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रहे थे। प्रकृति संपदा को नष्ट करने में लगे लोगों के बीच अन्ना हजारे आशा की एक किरण लेकर पहुँचे और इस गाँव की सूरत और सीरत सुधारने का संकल्प लिया।

अन्ना ने अपनी विस्तृत योजना के अन्तर्गत जिन मुद्दों पर जोर दिया वे इस प्रकार थे :-

1. प्राकृतिक संपदा का संरक्षण, संचय और सुव्यवस्थित उपभोग ।
2. सामाजिक कुरीतियों से निजात, सहकार और शिक्षा का महत्त्व, स्वस्थ और स्वच्छ जीवन ।
3. प्राकृतिक संपदा के जरिये आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनाना।
4. जनजन में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरूकता बढ़ाना।

कृषि आधारित गाँव के लिए पानी की उपलब्धता को प्राथमिकता देकर अन्ना ने वर्षा जल संग्रहण और जल संवर्धन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

वाटर शैड अवधारणा के अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधनों (पानी, मिट्टी और वानस्पतिक आच्छादन) को बेहतर और टिकाउ बनाने के लिए प्रयास प्रारम्भ किये। इन प्रयासों के तहत वृक्षा रोपण, मेडबन्दी, खाईयों का निर्माण और पत्थरों की दीवारों से पानी के बहाव में रुकावट पैदा करना आदि सम्मिलित थे। इन प्रयासों से भूमि के कटाव को कम किया गया। उपजाऊ परत को बहने से और तालाबों को भरने से रोका गया। मिट्टी की नमी को बनाये रखने के लिए वृक्षारोपण किया गया।

वर्षा जल संग्रहण के लिए 48 नालाबांध, 5 सीमेन्ट से निर्मित चैक डैम्स और 16 गेबियन संरचनाओं का निर्माण किया गया। उद्देश्य था कि पानी की एक भी बूंद बरबाद न हो।

उपरोक्त प्रयासों से कृषि सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता बढने लगी। जहाँ पहले करीब 300-400 एकड़ भूमि से एक फसल ही ली जाती थी वहीं अब 1500 एकड़ कृषि भूमि में दो फसलें आसानी से लेना संभव हो गया। फिर ड्रिप इरीगेशन, कम पानी माँगने वाली फसलें, सब्जियाँ और फलोत्पादन पर जोर दिया जाने लगा। जानवरों के लिए चारे की खेती शुरू कर दी जिससे पशुपालन विकास का स्रोत बन गया।

खेती के साथ ही लोग बकरी पालन, डेयरी और मुर्गीपालन द्वारा अतिरक्त आय भी अर्जित करने लगे।

वाटर मैनेजमेण्ट के साथ ही परम्परागत ऊर्जा के क्षेत्र में प्रयास किये गये। आज गाँव में सौर ऊर्जा, बॉयोगैस और पवन चक्की का उपयोग किया जा रहा है। गाँव की सभी सड़कें रात के समय सौर ऊर्जा के प्रकाश से चमचमाती हैं।

गाँव में शराब का सेवन, अवैध शराब का धंधा, बीड़ी, सिगरेट, गुटका और तम्बाकू बेचना अपराध की दृष्टि से देखा जाता है और निषेध है।

खेती बढ़ी तो रोजगार भी बढ़ा और अब मजदूरों की जरूरत पास के गाँवों से पूरी होती है।

दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय अब करीब 1.5 करोड़ का है। लोगों की औसतन आय 225 रुपये प्रति माह से बढ़कर 2500 रुपये हो गई है।

कर्जदार किसानों की जमीन को साहूकारों के हाथों में जाने से रोक, गाँव के लोग श्रमदान कर खेती

करते हैं और खेती की जमीन को ऋण मुक्त करा रहे हैं। सामूहिक विवाहों का आयोजन कर फालतू खर्चेसे बचने के उपाय किये जा रहे हैं।

स्कूल, हॉस्टल, जिमखाना के लिए भवन निर्माण पर एक करोड रुपये खर्च किये गये हैं। साथ ही गाँव के मन्दिर का भी जीर्णोद्धार किया गया है। बाहर के राज्यों से वर्षा जल संग्रहण और जल संवर्धन की तकनीक सीखने वालों के लिए ट्रेनिंग सेण्टर की स्थापना की गई है।

विकास के सभी काम अन्ना हजारे ने लोगों को श्रमदान के लिए प्रोत्साहित कर करवाये।

आज इस गाँव में ज्वैलरी की दुकानें, रेस्तरां, दैनिक जरूरत की वस्तुओं की दुकानें, मोटर गैराज, बैंक, एटीएम तथा कई अन्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हर घर में शौचालय की सुविधा वाले इस गाँव में लड़कियाँ दोपहिया वाहनों से सफर करती हैं ।

शिक्षा के लिए प्राथमिक विद्यालय तो है ही परन्तु अन्ना हजारे ने अपने प्रयास से एक उच्च विद्यालय का भी निर्माण कराया है, जहाँ बिगड़ैल किस्म के बच्चों का नामांकन कराया जाता है।

वर्ल्ड बैंक ने यह पूर्ण रूप से स्वीकार किया है कि रालेगाँव सिद्धि जो कि अर्धशुष्क क्षेत्र का अत्यधिक अविकसित गाँव था, को भी देश के एक सम्पन्न गाँव के समान रूपान्तरित कर दिया गया है। यह उदाहरण हालांकि चार दशक पुराना है परन्तु इस मान्यता को बल प्रदान करता है कि सांझे प्रयासों से प्राकृतिक सम्पदा को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। यह शेष भारत के लिए अनुकरणीय आदर्श है।

इस गाँव को न केवल विकसित करने परन्तु आदर्श गाँव बनाने का श्रेय उस समय के सरपंच और सामाजिक कार्यकर्ता श्री अन्ना हजारे को दिया जाता है। उनके इन प्रयासों के उपलक्ष्य में उन्हें 1992 में भारत सरकार ने पद्म भूषण प्रदान कर सम्मानित किया है।

(क्रमशः)

पृष्ठ 26 का शेष

महान क्रान्तिकारी..

भेद भुलाकर भारतवर्ष के समस्त क्षत्रिय कुलों की एकता के पक्षधर थे। महाराजा के निमन्त्रण पर राव गोपालसिंह जब भी पटियाला जाते, प्रमुखता से इसी सन्दर्भ में चर्चा होती रहती थी। राव गोपालसिंह के परामर्श पर महाराजा ने सौदा बारहठ किशोरसिंह बार्हस्पत्य को राज्य के इतिहास विभाग का अध्यक्ष बनाकर अपने वंश के पूर्व इतिहास की प्रामाणिक खोज के कार्य पर नियुक्त किया था।

गुजरात प्रान्त के सोरठ प्रान्तान्तर्गत जामनगर (नयानगर) के शासक जाम साहब जाड़ेजा राजपूत हैं। जाड़ेजा अपने को श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब के वंशज यदुवंशी मानते हैं। इसी प्रकार जैसलमेर के भाटी भी अपने को यादव श्रीकृष्ण के वंशज ही मानते हैं। सोरठ के राजपूत राज्यों के दौरे के समय राव गोपालसिंह खरवा तत्कालीन, महाराजा जाम साहब से भी मिले, जो विचारों में उदार और प्रगतिशील नरेश थे। राव गोपालसिंह ने उनसे अनुरोध किया कि पटियाला नरेश भी भाटी राजपूत हैं और उनकी इच्छा है कि आप और वे एक ही थाल में शामिल भोजन करके अन्य राजपूत वंशों के लिए प्रशंसनीय उदाहरण पेश करें और इस कार्य के दूरगामी परिणामों से भी उन्हें अवगत कराया। उन दोनों नरेशों ने एक थाल में भोजन करके एक उल्लेखनीय कार्य कर दिखाया। उक्त कार्य का श्रेय राव गोपालसिंह खरवा को प्राप्त हुआ। उन दिनों में ऐसा भी सुनने में आया था कि महाराजा पटियाला का राजपूतों की तरफ रुझान देखकर सिक्ख पंथ के प्रमुख नेताओं ने महाराजा को उनके उक्त कार्य से उत्पन्न धार्मिक एवं राजनैतिक उलझनों से अवगत कराया और उन्हें वैसा न करने की सलाह दी थी।

(क्रमशः)

प्रणाम का महत्त्व

– गोविन्दसिह कसनाऊ

इससे संबंधित महाभारत का एक वृतान्त लिखना मैं उचित मानता हूँ :–

महाभारत का युद्ध चल रहा था। कौरवों की तरफ से कर्ण, गुरु द्रोणाचार्य तथा भीष्म पितामह मैदान में थे। पाण्डवों की संख्या कम थी। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के रथ के सारथी थे। दोनों तरफ का मुकाबला बराबर चल रहा था। युद्ध नियमानुसार प्रातः शुरू होता और सूर्यास्त होने पर विराम ।

एक दिन रात्रि भोजन करने के उपरान्त, श्री भीष्म पितामह को क्रोध आ गया और उन्होंने प्रतिज्ञा कर दी 'कल मैं पाण्डवों का वध करके ही रहूँगा।'

भगवान श्री कृष्ण को तुरन्त समझ में आ गया कि कल युद्ध का अंतिम दिन होगा क्योंकि भीष्म पितामह अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करके रहेंगे।

श्री कृष्ण ने तुरन्त, रात्रि में, सोई हुई द्रोपदी को जगाया और कहा तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। आगे भगवान श्री कृष्ण तथा पीछे द्रोपदी। दोनों कौरवों के तम्बू तक पहुंचे। भगवान श्री कृष्ण ने द्रोपदी को आदेश दिया कि तुम शामियाने के अन्दर जाकर भीष्म पितामह से आशीर्वाद प्राप्त करके आओ ।

द्रोपदी ने भीष्म पितामह के शामियाने में प्रवेश किया। द्रोपदी को रात्रि के समय देखकर भीष्म पितामह को आश्चर्य हुआ और भीष्म पितामह खड़े हो गये।

द्रोपदी ने भीष्म पितामह के पास पहुंचकर पूर्ण आस्था से, भीष्म पितामह के चरण स्पर्श किये। भीष्म पितामह ने तुरन्त आशीर्वाद दिया– ''अखण्ड सौभाग्यवती भवः।''आशीर्वाद देने के बाद भीष्म पितामह को तुरन्त अपनी कुछ ही समय पूर्व की गई प्रतिज्ञा याद आई। भीष्म पितामह समझ गये कि कृष्ण के अतिरिक्त कोई भी मेरी प्रतिज्ञा नहीं काट सकता।

भीष्म पितामह ने द्रोपदी से पूछा तुम्हारे साथ श्री कृष्ण आये हैं क्या? द्रोपदी ने उत्तर दिया, 'हाँ शामियाने के बाहर खड़े हैं।' भीष्म पितामह अपने शयन शामियाने से बाहर आये।

श्री कृष्ण ने भीष्म पितामह के चरण स्पर्श किये और आशीर्वाद प्राप्त किया। उसके तुरन्त बाद भीष्म पितामह ने भी श्री कृष्ण के चरण स्पर्श किये और आशीर्वाद प्राप्त किया। दोनों एक दूसरे को हाथ जोड़कर विदा हो गये। भीष्म पितामह शयन शामियाने में तथा द्रोपदी और श्री कृष्ण अपने गन्तव्य की ओर।

वर्तमान में हम बड़ों को प्रणाम केवल दिखावे के लिए करते हैं। आशीर्वाद प्राप्त करते समय पूर्णरूप से झुकते भी नहीं हैं और केवल एक हाथ कुछ झुकाकर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं।

मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूँ। विद्युत ऊर्जा उच्च विभव से निम्न विभव की ओर प्रवाहित होती है। जितना विभवान्तर अधिक होगा, विद्युत ऊर्जा का प्रवाह भी उतना ही अधिक होगा अर्थात हम जितना अधिक झुककर दोनों हाथों से चरण स्पर्श करते हैं तब बड़े व्यक्ति की अधिक से अधिक शक्तियाँ चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करने वाले में चली जाती हैं। बड़े व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक शक्तियों का भण्डार होता है। अतः उस बड़े व्यक्ति की ये शक्तियाँ केवल पूर्णरूप से झुककर प्रणाम करने से ही प्राप्त हो जाती हैं। इसमें किसी भी प्रकार का खर्च नहीं लगता है।

संस्कृत भाषा में कहते हैं– विद्या ददाति

विनयम्। इसका अर्थ स्पष्ट है केवल नम्रता का भाव होना चाहिए। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में जगते ही, सर्वप्रथम माता को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। माता द्वारा संतान के लिए किया गया त्याग का ऋण आज तक कोई भी व्यक्ति चुका नहीं सका है। माता प्रारम्भिक शिक्षक होती है। माता अपनी संतान को अपना कलेजा निकालकर देने में एक क्षण भी नहीं लगाती है। वह ममता की मूरत है।

परिवार में दूसरा स्थान पिता का होता है। माताश्री से आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात पिताश्री से झुककर चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करें। परिवार में शेष बड़ों का आशीर्वाद भी प्राप्त करें।

परिवार में माताओं, बहनों, बेटियों के द्वारा किसी के भी चरण स्पर्श करना मैं अच्छा नहीं मानता हूँ क्योंकि नारियाँ स्वयं पूजनीय हैं। संस्कृत भाषा में कहा गया है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।।

विद्यालय अध्ययन हेतु जाने पर सभी गुरुजनों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

पृष्ठ 6 का शेष

समाचार संक्षेप

रघुनाथजी के मंदिर में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। निंबाहेड़ा तहसील के टिलाखेड़ा गाँव में भी साप्ताहिक शाखा का आयोजन रहा। 24 सितम्बर को अजमेर प्रान्त के ढिगारिया, सरवाड़ में भी कार्यक्रम समन्न हुआ। 24 सितम्बर को ही सांवलिया जी के पास स्थित श्री गणेश चौक, करौली में साप्ताहिक शाखा का आयोजन रहा। वागड़ प्रान्त में बांसवाड़ा जिले के बाई का गड़ा और कोटड़ा छोटा गाँव में साप्ताहिक शाखा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 26 सितम्बर को बांसवाड़ा जिले के ही पादर एवं जेथाजी का गड़ा में भी साप्ताहिक शाखा सम्पन्न हुई।

✦ बनासकांठा प्रान्त में सम्पर्क यात्रा का आयोजन रहा। 17 सितम्बर को थराद स्थित शारदा विद्यामंदिर में, 23 सिम्बर को दांतीवाड़ा तहसील के पांसवाल गाँव स्थित गंगेश्वर महादेव मंदिर परिसर में, जहाँ चौदह गाँवों से समाज बन्धु उपस्थित थे, बैठकें आयोजित हुई। 24 सितम्बर को पालनपुर तहसील के फतेहपुर स्थित शिव मंदिर में बैठक सम्पन्न हुई। 23 सितम्बर को थराद व सांचौर तहसील के गाँवों में भी सम्पर्क यात्रा रही। वाघासण, सवराखा, ताखुवा, अचलपुर न डभाल गाँवों तक पहुँच हुई।

✦ भीलवाड़ा में 16 सितम्बर को श्रीर क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के सहयोगियों की बैठक सम्पन्न हुई। शताब्दी वर्ष के दिल्ली कार्यक्रम हेतु निमंत्रण दिया गया।

✦ मध्य गुजरात संभाग में भी सम्पर्क यात्रा आयोजित हुई। 16-17 सितम्बर को अहमदाबाद जिले में धोलका तहसील के गांगड़, कोठ, झणंद, वौंढा गाँवों में, कड़ी तहसील के विडज, खावड, वेकरा व डरण गाँवों में सम्पर्क किया गया है। 24 सितम्बर को बडोदरा जिले में सावली तहसील के भादरवा, दोडका, वांकानेर, मौंकसी, पोइचा, रणजीतनगर, नटवरनगर व मंजूसर आदि गाँवों में समपर्क किया गया। 24 सितम्बर को ही साणंद शहर में भी सम्पर्क अभियान चला तथा होने वाले बालिका व बालक शिविर हेतु भी चर्चा की गई। ●

अपनी बात

सद्गुरु होता है कुछ-कुछ सीमित, कुछ-कुछ असीम। एक हाथ सीमित, एक हाथ असीम। दिखाई पड़ता है सीमित और जो नहीं दिखाई पड़ता है वह असीम। हमारी भाँति देह में और परमात्मा की भाँति देह-हीन। मनुष्य और परमात्मा के बीच एक कड़ी। चलता है, उठता है, बैठता है, सोता है, खाता है बस ठीक हमारी तरह। इसलिए उसका हाथ पकड़ा जा सकता है। उसके चरणों में सिर रखा जा सकता है। उसकी धड़कन सुनी जा सकती है। उसका गीत हमारी ही भाषा में गाया जाता है। कभी-कभी समझना कठिन भी हो पर असम्भव नहीं, शान्त मन से, शून्य मन से समझें तो कुछ ना कुछ बूँद तो पड़ ही जाती है। न भरे घड़ा, पर बूँद भी पड़ जाए जल की, तो भी भरेपन की यात्रा शुरू हो गई। बूँद-बूँद मिलकर ही तो सागर बन जाता है। तो बूँद-बूँद होकर हमारी गागर क्यों नहीं भर सकती। इसीलिए तो जो सद्गुरु के पास आए उन्होंने गुरु को भगवान कहा? जो दूर रहे, वे सदा हैरान हुए, चौके, परेशान हुए, तर्क-विचार में पड़े, विवाद उठाया।

जो गुरु के पास नहीं आए, दूर-दूर से देखे उन्हें गुरु का अन्तर्मन कैसे दिखाई पड़े? उन्हें गुरु के शून्य का स्वाद कैसे लगे? दूर-दूर से देखा है तो गुरु की देह ही दिखाई पड़ेगी। तब गुरु में वे सब बातें दीखेगी जो सब व्यक्तियों में होती हैं। गुरु बीमार भी पड़ता है, तो व्यक्ति सोचता है यह कैसा भगवान। गुरु बुढा भी होता है। गुरु को भूख भी लगती है, व्यक्ति सोचता है भगवान को कभी भूख भी लगती है? एक दिन गुरु इस देह से तिरोहित भी हो जाएगा तो क्या भगवान की भी मृत्यु घटित होती है? यह बातें सन्देह पैदा करती हैं, पर अभी गुरु का आधा ही रूप देखा गया है। हम गुरु के मंदिर के बाहर-बाहर घूमे, मंदिर की दीवार बाहर से देखी, पर मंदिर का देवता अपरिचित रह गया। हमने गुरु की वीणा तो देखी पर गुरु की वीणा से उठते संगीत को नहीं सुना। गुरु के इतने पास गये ही नहीं कि संगीत सुन सकें, गुरु के पुष्प को तो देखा लेकिन पुष्प से उठती सुवास नासपुटों में न भरी। दूर-दूर अपने को ऐसे बचाये रहे, कवच ओढे रहे, ढालों में अपने को छिपाये रखे तो गुरु की गंध कैसे नासपुटों तक पहुँच जाती। इसलिए जो ऐसे दूर रहे, वे यह ही कहेंगे कि कैसे गुरु को भगवान कह रहे हो।

मगर जो पास आए, जिन्होंने हिम्मत जुटाई, क्योंकि गुरु के पास आना बड़ी हिम्मत की बात है। बड़ी-से-बड़ी हिम्मत इस जगत में यही कही जा सकती है- सद्गुरु के पास आना! क्योंकि सद्गुरु के पास आने का अर्थ है मिटना, जैसे कोई नमक की डली सागर में उतर जाए, ऐसा है सद्गुरु में उतरना। नमक की डली गलेगी और खो जाएगी। खोने की जिनमें तत्परता है, जिन्होंने जीवन देखा और जीवन की व्यर्थता देखी, जिन्होंने जीवन पहचाना और जीवन की असारता पहचानी, जिन्होंने जीवन को सब तरफ से टटोला और खाली, रिक्त पाया, वे ही तैयार होते हैं नमक की डली की तरह सागर में, गुरु में डूबने को।

जो सद्गुरु के पास गये हैं, उन्होंने सदा कहा है,- मिला है। जिन्होंने पास आने की हिम्मत की, जैसे-जैसे निकटता बढी, देह तिरोहित होती गई। जैसे-जैसे पास आते गये देह के भीतर जो विराजमान चैतन्य था, वह स्पष्ट होने लगा। भगवत्ता आविर्भूत होने लगी। सुगंध आने लगी। संगीत सुनाई पड़ने लगा। और जब संगीत सुनाई पड़ जाए तो वीणा गौण हो जाती है। वीणा का प्रयोजन तो संगीत सुनाई पड़ जाए, बस उतने तक ही है। निमित्त है। तो जो गुरु के पास आए, उन्होंने यह सब पाया, उन्होंने गुरु को भगवान कहा।

हमने देखा कि पूज्य नारायणसिंहजी रेड़ा ज्यों-ज्यों पूज्य तनसिंह जी के पास गये, परिवर्तन स्पष्ट नजर आया। देह थी, पर महसूस होता था जैसे, विचारों में, व्यवहार में, भावों में देह विहीन स्थिति बन गई है। जो-जो पू. तसिंहजी के पास गया, जितना पास गया, उतना पाया। जितनी प्राप्ति, उसी के अनुकूल अग्रिम यात्रा की गति बनी। ●

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष समारोह की श्रृंखला में प्रान्त चांधन, सम्भाग–जैसलमेर में वर्ष भर में आयोजित कार्यक्रमों की सूची

वीर विक्रमादित्य

लोकदेवता हडबू जी सांखला

जुझार महेशदास जी जसोड़

आईनाथ माता मंदिर, धायसर

जुझार भाखर सिंह जी जसोड़

1. वीर विक्रमादित्य जन्मोत्सव कार्यक्रम 22 मार्च 2023, हरसिद्धी माता मन्दिर, मूलाना।

2. लोक देवता हडबू जी सांखला जयन्ती कार्यक्रम-8 जुलाई 2023, डेलासर।

3. जूझार महेशदास जी जसोड़ शौर्य एवं स्मृति दिवस कार्यक्रम- 24 जुलाई 2023 स्थान-सांवला।

4. आईनाथ माता मन्दिर, धायसर में हवन व यज्ञ कार्यक्रम-24 जुलाई 2023।

5. जुझार भाखरसिंह जी जसोड़ शौर्य व स्मृति दिवस कार्यक्रम-29 जुलाई 2023 स्थान-सोढाकोर

6. श्रद्धेय नारायण सिह जी रेड़ा की जयन्ती पर आईनाथ माता मन्दिर, दवाड़ा में दिनांक 30 जुलाई 2023 को यज्ञ कार्यक्रम।

7. राजश्री दयालादास जी शौर्य स्मृति कार्यक्रम का पोस्टर विमोचन दिनांक 19 अगस्त 2023 को गजेन्द्र सिंह शेखावत केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री द्वारा।

8. राजश्री दयालादास जी शौर्य स्मृति कार्यक्रम 8 सितम्बर 2023 स्थान राजश्री दयालदास स्मारक, जैरात।

9. राव श्री डेल्हाजी जसौड़ शौर्य एवं स्मृति कार्यक्रम दिनांक 24 सितम्बर 2023 को डेल्हाजी जी स्मारक, झाबरा में माननीय संघ प्रमुख साहब श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकावास के परम सान्निध्य में सम्पन्न।

10. मातृ-शक्ति स्नेह मिलन कार्यक्रम प्रस्तावित आगामी दिनांक 23 अक्टूबर, 2023 को सती मोती कंवर जी व सोहन कंवर जी स्मारक बडोडा गांव में पूज्य श्री तनसिंह जी की सुपुत्री जागृती कंवर बाईसा के परम सान्निध्य में।

11. पीर पीथोरा जी स्मृति दिवस कार्यक्रम 15 नवम्बर 2023 को मुलाना में।

आईनाथ माता मंदिर, दवाड़ा

राजश्री दयालदास जी स्मारक

राव डेल्हा जी जसोड़ स्मारक

सती मोतीकंवर व सती सोहनकंवर स्मारक

पीर पिथोरा जी

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह 28 जनवरी 2024,

जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम, नई दिल्ली – उम्मेदसिंह बड़ोडा गांव 9116441967

नवम्बर, सन् 2023
वर्ष : 60, अंक : 11

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या – Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह